१

जंगलतंत्रम (उपन्यास)

- श्रवणकुमार गोस्वामी

इकाई की रुपरेखा :

१.१ उद्‌देश्य
१.२ प्रस्तावना
१.३ उपन्यास की कथावस्तू
१.४ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण
 १.४.१ सिंह
 १.४.२ मोर
 १.४.३ नाग
 १.४.४ चूहा
१.५ सारांश
१.६ संदर्भ सहित व्याख्या (उदाहरण सहित)
१.७ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
१.८ लघुत्तरीय प्रश्न

१.१ उद्‌देश्य

- विद्यार्थियों को 'उपन्यास' विधा के महत्व को समझाना।
- 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के लेखक श्रवणकुमार गोस्वामी के साहित्यिक योगदान से अवगत कराना।
- इस उपन्यास के प्रतीकात्मक पात्रों के माध्यम से भारत की राजनीति को दीमक की तरह चाटती भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, चमचागिरी, अफसरशाही की वास्तविक स्थिति को उजागर करना।

१.२ प्रस्तावना

डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी प्रेमचंदोत्तर युग के सशक्त रचनाकार हैं। प्रेमचंद के समान ही इन्होंने शोषिण- पीड़ित - अन्याय से त्रस्त भारतीय जनमानस की समस्याओं को अपने साहित्य में उठाया है। इन्होंने अपने साहित्य में भारत की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक परिस्थितियों को बखूबी उजागर किया है। सन् १९७९ में प्रकाशित उपन्यास 'जंगलतंत्रम' इनके बारह उपन्यास में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है जिसमें तत्कालीन राजनीति की वास्तविकता को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है।

munotes.in

१.३ उपन्यास की कथावस्तू

'जंगलतंत्रम' उपन्यास की कथा पंचतंत्र की कहानियों के तर्ज़ पर शुरु होती है, जिसमें एक नानी माँ से मुहल्ले के बच्चे एक कहानी सुनाने की जिद्द करते हैं और नानी माँ उन्हें कहानी सुनाती हैं। यह कहानी किसी राजा-रानी या परी वगैरह की नहीं है बल्कि देश के तत्कालीन परिवेश पर आधारित, यथार्थ पर आधारित सच्ची कहानी है। नानी जो कहानी सुनाती हैं उससे यह स्पष्ट होता है कि इन्हें भारत देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों की पूरी समझ है और यही समझ वे देश की भावी पीढ़ी के बच्चों के अंदर पैदा कराना चाहती हैं। इस उपन्यास की पूरी कथा इसी समझ पर आधारित है।

नानी कहानी की शुरूआत करते हुए कहती हैं - शिवजी के गले में नागराज लिपटा रहता है, गणेश जी चूहे की सवारी, कार्तिकेयजी मोर की सवारी और पार्वती जी सिंह की सवारी और शिवजी बैल की सवारी करते हैं। नाग, मोर, सिंह, चुहा, बैल आदि सभी एक दूसरे के परम शत्रु हैं परन्तु शिव परिवार में बड़े प्रेम से रहते हैं। परन्तु एक दिन ताकतवर सिंह के मन में छल की भावना उत्पन्न होती है, वह मोर की झूठी प्रशंसा करके उसे मारने की कोशिश करता है। मोर बहुत चतुराई से सिंह के चंगुल से बच निकलता है। सिंह कि नियत खराब होते देखकर मोर भी नाग की तरह अपना आचरण बदलता है और नाग को बहला-फुसलाकर उसे चोटिल करता है। किसी तरह नाग खुद को मोर के प्रहार से बचाता है लेकिन वह भी अपने से कमजोर प्राणी चुहे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है। किसी तरह से घायल चूहा अपने जीवन की रक्षा करता है। और मन ही मन चिन्तन कर रोने लगता है कि वह सबसे कमजोर जीव है वह खुद को कैसे नाग, मोर और सिंह आदि के अत्याचार से बचा सकेगा? चूहा न्याय की उम्मीद लेकर शिवजी के पास जाता है जहाँ सिंह, नाग, मोर सबको सुनकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित हो जाते हैं और उन्हें दंडित करते हुए मर्त्यलोक के जंगल में भेज देते हैं। गणेशजी चूहे को जाते समय उसकी शक्ति का अहसास कराते हैं।

मर्त्यलोक के जंगल में पहुँचकर सभी जंगल का स्वामी बनना चाहते हैं परन्तु सिंह जंगल में पहले से ही पड़ी हुई सिंह की लाश का फायदा उठाकर मौके पर चौका मारता है और बहुत चालाकी और धूर्तता से स्वयं को जंगल का राजा घोषित करता है। जंगल के सभी प्राणियों के साथ नाग मोर व चूहा भी उसे अपना राजा स्वीकार करते हुए उसे 'जंगलपति' निर्वाचित करते हैं। सिंह मर्त्यलोक में वर्ण व्यवस्था के अनुसार कार्य-कुशलता और दक्षता को सूक्ष्मता से देखते हुए उन्हें अलग-अलग विभाग सोंपता है। सिंह वर्ण का होने के कारण वह जंगल के प्रशासन की बागडोर स्वयं के हाथों में रखता है, मोर वर्ण को प्रशासक के तौर पर शासनतंत्र को संभालने की जिम्मेदारी सौंपता है, नाग वर्ण के स्वभाव को देखते हुए उसे वाणिज्य व्यापार का काम सौंपता है और अंत में चूहा वर्ण को सेवा कार्य की जिम्मेदारी सौंपते हुए कहता है कि वह राजतंत्र के बजाय प्रजातंत्र में विश्वास करता है, सबको समान अधिकार, समान अवसर देना चाहता है जिसमें न कोई छोटा हो, न कोई बड़ा। सबसे छोटा, दुर्बल, अनासक्त, पिछड़ा, अशिक्षित, दलित, दीन-दुखी चूहा है अतः उसकी उन्नति एवं समृद्धि पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाएगा। चूहे को अधिक अधिकार देने के कारण मोर और नाग चिंतित हो जाते हैं और सिंह के 'जंगलतंत्र' का विरोध करने का निर्णय लेते हैं। चूँकि सिंह चूहे को अधिक महत्व देता है, यह बात मोर और नाग को बिल्कुल रास नहीं आती है। सिंह राजनीतिक दाँव-पेंच करने मे माहिर है, उसके आदेशानुसार प्रत्येक अधिकारी उससे अकेले में बातचीत करता है, सिंह अन्य

munotes.in

दूसरों को नीचा दिखाकर अपने समक्ष खड़े वर्ग की प्रशंसा करता है और सबका विश्वास जीतने की कोशिश करता है। सिंह मोर को बताता है कि तुम्हें जंगलतंत्र का संविधान लिखते समय चूहा वर्ण को दिए गए आश्वासनों, उनकी संपन्नता-समृद्धि और उन्नति सबका ध्यान रखना है ताकि इस सबसे बड़े वर्ण को सुखी-संपन्न और स्वतंत्र बनाकर इन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल करना है। यदि चूहे संतुष्ट होंगे तो सिंह की सरकार पर किसी तरह का कोई संकट नहीं आएगा। 'जंगलतंत्र' को चलाने के लिए संविधान बनाने हेतु इस तरह की हिदायतें मोर को देने के पश्चात सिंह नाग को बुलाकर कहता है वह अपने धन के बल पर इस बनियों की दुनिया में कुछ भी कर सकता है क्योंकि जो जितना बड़ा बनिया हैं, वह उतना ही सम्मानित और शक्तिशाली है। मोर और नाग को बुलाने के बाद सिंह चूहा को बुलाकर कहता है कि ये नाग और मोर दोनों ही मुझसे डरते हैं। मेरे होते हुए ये दोनों तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे, लेकिन तुम्हें मेरी हर एक बात माननी होगी, हमेशा मेरे पक्ष में रहना होगा। तभी सिंह का वरद् - हस्त चूहा को प्राप्त हो सकेगा। सिंह चूहा को यह इसलिए भी कहता है ताकि उसकी राजगद्दी, उसकी सत्ता सुरक्षित रह सके, खैर, सिंह अपनी चिकनी-चुपड़ी बातो से साम-दाम-दंड-भेद नीति का सहारा तीनो मोर, नाग और चूहा को प्रभावित करता है। इसके बाद सभी अपने-अपने विभाग से जुड़े कामों में व्यस्त हो जाते है। जंगलतंत्र का संविधान लागू हो जाता है, मोर और नाग अपनी शक्ति का दुरुपयोग शुरु कर देते हैं, उनकी धाँधलेबाजी का विकार चूहा इन दोनों की फरियाद लेकर जंगलपति सिंह के पास पहुँचता है। यह बात दोनों को अच्छी नहीं लगती है। वे दोनों नहीं चाहते हैं कि सिंह चूहा को सबलता प्रदान करे।

नाग कुछ दिन के बाद चूहे को अपने पक्ष में शामिल करने के लिए एक राजनीतिक चाल चलता है। वह चूहे के बताता है कि तुझे अपने ऊपर होने वाले अत्याचार - अन्याय का विरोध करने के लिए अखबार निकालना चाहिए और सत्ता में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना चाहिए। सिंह और मोर की करतूतों को उजागर करने के लिए अखबार सबसे बेहतर माध्यम है, मेरी (नाग की) दौलत और आपकी मेहनत दोनों के सहयोग से अखबार निकालकर भ्रष्ट तंत्र को जगजाहिर बहुत आसानी से किया जा सकता है। चूहा तत्परता से अखबार निकालने के लिए राजी हो जाता है। नाग मन ही मन सोचता है कि चूहे द्वारा अखबार निकालने कि वजह से सिंह और मोर उसके विरोधी बन जाएँगे और तीनों की आपसी लड़ाई का फायदा नाग उठाएगा। चूहे द्वारा अखबार निकालने का परिणाम यह होता है कि जनता में सिंह सरकार की पोल खुलने से उसकी लोकप्रियता कम होती है, प्रशासनिक अव्यवस्था के कारण सिंह, मोर के बीच द्वंद्व शुरू हो जाता है।

जंगलतंत्र में संविधान लागू होने के बाद आम चुनाव की घोषणा होती है। चूँकि सिंह की सत्ता मजबुत है फिर भी वह कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहता है इसलिए वह चूहे को अपने पास बुलाकर काफी आदर सम्मान देते हुए यह प्रलोभन देता है कि मैं तुम्हारे अखबार को सरकारी विज्ञापन दिलवा दूँगा, अगर नाग प्रेस बंद करने की धमकी देगा तो भी तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि मैं तुम्हारे अखबार का जंगलीकरण कर दूँगा। इसके बदले में चूहा को क्या करना है वह आगे यह भी कहता है कि इस चुनाव में चूहा और उसकी बिरादरी के सभी प्राणी खरगोश, गिलहरी, मेंढ़क, छछुंदर को एक जुट होकर सिंह का साथ देना है, वोट देना है। चूहा इन सभी प्राणियों का नायक होगा। इस पूरे दल को अनेक सरकारी योजनाओं के तहत सहायता-सहूलियतें दी जाएँगी। इसके बदले चूहा अखबार का जंगलीकरण और सरकारी विज्ञापन की शर्त सुनकर प्रसन्नचित होकर चला जाता है।

चूहे की समर्थता मिलने से सिंह और मजबूत हो जाता है और उसकी तरफ से निश्चिंत होकर नाग की तरफ मूड़ता है। नाग के पास प्रचुर धन है। वह इस धन-बल से कहीं चुनाव न जीत जाए इसलिए सिंह, मोर के माध्यम से अनेक प्रलोभनों का संदेश भिजवा कर नाग को अपने पास बुलाता है, उसे जब चाहे, जितनी बार चाहे डसने की तथा सामानों की मनमानी कीमतें बढ़ाने की खुली छूट देकर उसे अपने पक्ष में करता है।

नाग तन-मन-धन से सिंह को आत्मसमर्पण कर देता है। अब नाग के साथ-साथ मोर भी सिंह को चुनाव में हर प्रकार का प्रशासनिक सहयोग करने का आश्वासन देता है।

जंगल के आम चुनाव में सिंह की विजय होती है। जंगल सभा में उसके समर्थक नब्बे प्रतिशत जीत हासिल करते हैं। इस ऐतिहासिक जीत की चर्चा चारों तरफ होती हैं। सिंह द्वारा मिली छूट और आश्वासनों के कारण नाग चुनाव खत्म होते ही सभी चीजों कि मनमानी कीमत बढ़ा देता है, जिसके कारण चूहा वर्ग का जीना बहुत मुश्किल हो जाता है, खाने-पीने की चीजों की कीमत बढ़ने से और अधिक काला बाजारी, भ्रष्टाचार बढ़ता है। दो जून की रोटी खातिर तरसता चूहां, सिंह - मोर और नाग तीनो की मिली भगत को समझते हुए, उसके भीषण दुष्परिणाम को देखते हुए अपनी आवाज अपने अखबार के माध्यम से बुलंद करता है आम - आदमी का जीवन दूभर करने वाले इन तीनों के खिलाफ अपने अखबार में लिखकर उनके योजनाओं, करतूतों की तीखी आलोचना करता है। नाग जैसे व्यापारियों की जमाखोरी, कालाबाजारी के मुद्दे को बहुत निडरता से छापता है ताकि उनका पर्दाफाश हो सके।

जंगलिस्तान के साथ युद्ध में विजयी होने के बावजूद उनसे समझौता करके जवानों का अपमान करने वाले सिंह की भी वह बहुत तीक्ष्ण आलोचना करता है। जब सिंह द्वारा खाद्यान्नों (खाने पीने की चीजों) का जंगलीकरण कराया जाता है तब चूहे के नेतृत्व में हजारों की संख्या में एकत्रित लोगों का जुलूस निकलता है। जुलूस में सम्मिलित जन समुदाय व्यापारियों के घरों में आग लगाते हैं, उनकी दुकाने लूट लेते हैं। इन लोगों ने मोर के बंगले को भी आग के हवाले कर दिया है। चूहा और उसके समर्थकों के इस आंदोलन को कुचलने के लिए जेल में डलवा देता है। चूहे और आंदोलनकारियों के जेल जाते ही जंगल के अन्य वन्य जीव - जंतु क्रोधातुर होकर चुहे के एक इशारे पर कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं। चूहे की इस नेतागिरी से नाग और मोर दोनों ही दयनीय, भयभीत हो जाते हैं लेकिन सिंह अपनी हार स्वीकार करने के लिए कतई तैयार नहीं है। अपनी गलती मानने के बजाय सिंह जंगलवाणी तथा अखबारों के माध्यम से यह समाचार प्रसारित करवाता है कि जेल में प्लेग फैल जाने के कारण वश चूहें के साथ-साथ अनेक आंदोलनकारी - कैदियों की मृत्यू हो गई है।

अंततः चूहा पुनः शिवजी के पास जाकर अपनी करुण गाथा गाता है कि कैसे सिंह मोर और नाग उसके शत्रु हैं, वैसे बाहरी तौर पर तीनों में मतभेद दिखाई देता है परन्तु भीतर से सब मिले हुए हैं। तीनों ने साथ मिलकर आम लोगों का जीवन दूभर कर दिया है। तीनों की सम्मिलित शक्ति का मुकाबला करना चूहे के बस की बात नहीं है। चूहे की बातें सुनकर शिवजी उससे कहते हैं कि तू कायर, सुविधाजीवी और पलायनवादी है। क्षण भर के सुख के लिए तुने अपना भविष्य चौपट कर दिया है, पर तू विरोध करना नहीं जानता है। तू दूसरों का जयजयकार करना बन्द कर। अब तक तू जिनके पीछे चल रहा था अब उनके आगे चल। अपनी निर्बलता का कारण सिर्फ तु खुद है। तू अपनी शक्ति पहचान जिस तरह झाडू से गंदगी दूर की जाती है, उसी प्रकार तु अपने वोट से उन सभी का सफाया कर सकता है जो तेरे दुश्मन हैं। "अगर तूने अपना

झाडू पहले की तरह बेंचन दिया हो, तो उससे समाज में व्याप्त गंदगी को अपने वोट से साफ कर।"

शिवजी के इन बातों से चूहा स्वयं में अपनी शक्ति का अहसास करता है और कहता है कि अब उसे ज्ञान मिल गया है कि वह अन्य प्राणियों से कहीं अधिक शक्तिशाली है, वह दुबारा कोई गलती नहीं करेगा। ऐसा कहते हुए चूहा खुशी-खुशी अपूर्व उत्साह और दृढ संकल्प के साथ पुनः अपने जंगल की ओर प्रस्थान कर जाता है। उपन्यास की कथा यहीं समाप्त होती है।

१.४ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

उपन्यास जंगलतंत्रम् के मुख्य पात्र है सिंह, मोर, नाग और चूहा।

१.४.१ सिंह :

उपन्यास जंगलतंत्रम में सिंह राजनीतिक नेता का प्रतीक है और देश के सभी नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है। सिंह जंगल के सभी प्राणियों में सबसे अधिक शातिर, शक्तिशाली और तेज है। वह अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति हेतु, सत्ता की कुर्सी की खातिर मोर-नाग-चूहे और अन्य प्राणियों के साथ साम-दाम-दंड-भेद की नीति अपनाकर 'जंगलपति' बनता है। जंगल में पहले से मरे हुए सिंह को मारने का दावा करने वाला सिंह खुद को चोटिल कर यह दर्शाना चाहता है कि वह एक अत्याचारी - दुराचारी- पापी सिंह के राजतंत्र को समाप्त कर प्रजातंत्र का सुशासन लाना चाहता है। इसके लिए वह मोर-नाग और चूहा को सबसे पहले अपने पक्ष में करता है, उन्हें उनकी योग्यतानुसार कार्यभार सौंप कर सभी पर कड़ी निगरानी रखता है ताकि कोई उससे बगावत न कर पाए। इस बात को ध्यान में रखते हुए वह मोर-नाग और चूहा तीनों से कभी एक साथ नहीं मिलता, बल्कि सबको अकेले - अकेले मिलने के लिए बुलाता है और दूसरे को नीचा दिखाता है। नाग अपने धन-बल से सिंह की सत्ता न अपना ले, मोर सत्ता में और अधिक शक्तिशाली न होने पाए, चूहा अपने वर्ग के लोगों के साथ होने वाले अन्याय-अत्याचार शोषण के विरुद्ध आंदोलन खड़ा न करे, चूहा अपने अखबार में सिंह के विरोध में अधिक कुछ न छापने पाए, इन सब बातों की पल-पल की खबर, सिंह लगातार रखता है। सबके मुँह पर सबके मनवाली बात करता है तो प्रजातांत्रिक देश में चूहे की क्या भूमिका है, वह कितना शक्तिशाली है, समाज में चूहा - वर्ग का क्या स्थान है वह इन सभी बातों की पुष्टि करता है। लेकिन उसके हर एक क्रिया-प्रतिक्रिया, क्रिया-कलाप में सत्ता की लोलुपता, दाँव-पेच, छल, झूठे आश्वासन, मोहक नारेबाजी और शोषण की भावना स्पष्ट है। सिंह समाजवाद की स्थापना कर जंगल से गरीबी, असमानता, भ्रष्टाचार और तमाम सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं को समाप्त करने का झूठा आश्वासन देता है परन्तु उसकी कथनी और करनी में कोई समानता नहीं है।

इस प्रकार उपन्यास का सिंह उन सभी राजनेताओं के दोहरे चरित्र का पर्दाफाश करता है जो सत्ता की कुर्सी के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं।

१.४.२ मोर :

उपन्यास जंगलतंत्रम का मोर अफसर वर्ग का प्रतीक है। वह देश के तमाम अफसरों का प्रतिनिधित्व करता है जो राजनेताओं के मातहत कार्यरत रहते हुए उनके साथ मिलकर

munotes.in

भ्रष्टाचार को पल्लवित - पुष्पित करते हैं, चमचागिरी, जी-हुजूरी करके स्वार्थ सिद्धि करते हैं, रिश्वत खोरी की लत लगने के कारण अपना ईमान बेच चुके हैं।

जंगल (देश) में सत्ता संभालने वाले सिंह के बाद दूसरा स्थान मोर का है क्योंकि वह शासनतंत्र अच्छी तरह संभाल सकता है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह कहीं भी, कभी भी ओर किसी के भी सामने नाच सकता है इसीलिए उसकी अफसरशाही में प्रशासनिक व्यवस्था ठीक चलती है। वह जहाँ एक तरफ सिंह के साथ मिलकर पूंजीपति नाग की मनमानी पर नकेल कसता है तो वहीं दूसरी तरफ नाग से मिलकर उससे खुब रिश्वत ऐंठता है, महंगे-महंगे होटलों में महंगी-महंगी पार्टियाँ लेता है। मोर कहीं अपनी अफसरशाही का डंडा न चलाने पाए, इससे पहले ही नाग-मोर का मुंह रिश्वत से बंद रखता है। मोर चूहा को अधिक अधिकार देने का विरोध करता है, पर कुछ सिंह के आदेशानुसार कुछ कर नहीं पाता। वह इतना अवश्य समझ चुका है कि सत्ता पाने के लिए चूहे-प्रजाति का इस्तेमाल कैसे करना है और चुनाव के बाद उनके साथ कैसा व्यवहार करना है। जब चूहा मोर के खिलाफ नारे लगाता है कि 'मोर की अफसरशाही नहीं चलेगी, मोर की छुट्टी करो' तो मोर चूहा को बड़े प्यार से अपने पास बुलाकर खाने-पीने की चीजों से उसका खूब आवाभगत करने उसके मन में यह बात अच्छी तरह बैठा देता है कि नाग जैसे पूंजीपति वर्ग की चोरबाजारी जमाखोरी, मनमानी कीमतों का इजाफा करने के पीछे मोर नहीं बल्कि सिंह जिम्मेदार है। वह एक अदनासा अधिकारी है, जबकि हकीकत यह है कि मोर - नाग की सांठ-गांठ हमेशा से बनी रही है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपन्यास जंगलतंत्रम् में मोर की अहम भूमिका है और वह देश के स्वार्थी, अवसरवादी, सुविधाजीवी, गिरगिट की प्रवृत्ति रखनेवाले, रिश्वतखोरी, चमचागिरी, जी हुजूरी करने वाले अधिकारियों की नुभान्दगी करता है।

१.४.३ नाग :

उपन्यास 'जंगलतंत्रम' का नाग देश के पूंजीपति-व्यवसायी-व्यापारी वर्ग का प्रतीक है। यह कि यह दुनिया सिर्फ पैसे के बल पच चलती है, जिसके पास पैसा है, उसके पास ताकत है, प्रतिष्ठा है, इन्हें धन कालाबाजारी करना हो, चंदा इक्ट्ठा करना हो, रिश्वत ले -देकर कोई काम निकालना हो, हर क्षेत्र में ये माहिर हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उस वक्त मिलता है जब सिंह के आदेशानुसार मोर, नाग के दिन में बार -२ डसने पर पाबंदी लगाता है, नाग के व्यापार पर लगाम लगाने का प्रयत्न करता है तो नाग मोर की पत्नी को उपहार और मोर को महँगी-महँगी पार्टी देकर, रिश्वत देकर अपने पक्ष में मिला लेता है और मोर के नाक के नीचे व्यापार में खूब मुनाफा कमाता है जिससे चूहा वर्ग अर्थात् आम जनता त्राहि-त्राहि कर उठती है। नाग अपने धन बल पर चुनाव लड़ना भी चाहता है परन्तु सिंह की महत्त्वाकांक्षा के आगे उसकी महत्त्वाकांक्षा बौनी पड़ जाती है। और वह तन-मन-धन से सिंह को आत्मसमर्पण कर देता है। सिंह के चुनावी विजय होने में नाग के धन की भी अहम् भूमिका है।

नाग जहाँ एक तरफ सत्ता के शीर्ष पर बैठे राजनेता सिंह को हमेशा प्रसन्न करके, खुश करके रखना चाहता है, तो वहीं मोर जैसे प्रशासनिक अधिकारियों को भी रिश्वत आदि देकर उन्हें अपने पक्ष में रखता है। इस तरह वह सिंह और मोर दोनों की मिली भगत से खूब धनार्जन करता है, आम जनता यानि की चूहा वर्ग को खूब लूटता है, उसकी जमाखोरी कालाबाजारी जैसे करतूतों से महंगाई बढ़ती जाती है।

नाग कभी नहीं चाहता कि चूहा वर्ग का विकास हो या उन्हें किसी तरह का कोई विशेष अधिकार प्राप्त हो। उनको समान अधिकार दिए जाएँ, उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़कर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए। इसके बावजुद नाग, सिंह और मोर से बदला लेने के लिए चूहा को, आर्थिक सहयोग करके प्रेस की स्थापना करवाता है जहाँ से दो दैनिक अखबार - एक जंगली भाषा (हिन्दी भाषा का प्रतीक) और दूसरा मोर भाषा (अंग्रेजी भाषा का प्रतीक) में प्रकाशित होता है। नाग सिंह और मोर के दफ्तरों से फाइल गायब करवाकर दोनों की ऐसी-ऐसी पोल इन अखबारों के जरिए खोलता है जिन्हे सिर्फ सिंह और मोर ही जानते थे। अब सिंह चूहे से बहुत नाराज हो गया। नाग की यह साजिश पूरी हुई क्योंकि वह चूहे को सिंह की नजरों में गिराकर तीनों सिंह-मोर-चूहा में दरार डालकर अपना प्रतिशोध लेना चाहता था।

इस प्रकार, निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि नाग अर्थात पूंजीपति समाज जबान का पक्का नहीं हे, वह कभी बिना जहर उगले रह ही नहीं सकता, वह अपनी चालाकी से आस्तीन का साँप होते हुए भी गले का हार बनकर जीने की कला में निपुण है। धूर्तबाजी, कालाबाजारी, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, अनैतिक तरीके से अधिक से अधिक लाभ कमाने की तत्परता इनके रग-रग में व्याप्त है।

१.४.४ चूहा :

उपन्यास में चूहे का चरित्र सामान्य जनमानस का प्रतीक है। वह पूरे उपन्यास में देश के लगभग ४० करोड़ गरीब-मजदूर-किसान जनता का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें सैकड़ों वर्षों से हाशिए पर रखा गया, उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया, उनकी जिन्दगी जानवरों से भी बदत्तर थी, उन्हें पहले कभी समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास नहीं किया गया, जिनके नरकीय जीवन की कल्पना भी उच्चवर्ग नहीं कर सकता क्योंकि धनाढ्य वर्ग या समर्थ-समृद्ध संपन्न समाज ने हमेशा निम्न वर्ग - निम्न जाति के लोगों के साथ अन्याय, अत्याचार और शोषण ही किया।

उपन्यास 'जंगलतंत्रम' में चूहा एक कमजोर-कायर-निर्बल-गरीब-शोषित पात्र होते हुए भी सिंह के बाद अहम भूमिका रखता है क्योंकि सिंह को चुनाव में जीत दिलाकर सत्ता के शीर्ष पर पहुँचानेवाला भी चूहा ही है ठीक यही स्थिति भारतीय प्रजातंत्र की है। चुनाव के पहले बड़े-बड़े वायदे करने वाले राजनेता चुनाव जीत जाने पर आम आदमी के साथ कितना न्याय करते हैं कितना विकास का कार्य करते हैं, दीन-दुखियों, गरीबों, किसानों, मजदूरों के हित में कितना कार्य करते हैं यह जगजाहिर है यह सारी बातें हम चूहे की पीड़ा, उसके आंदोलन के माध्यम से समझ सकते हैं।

उपन्यास में दर्शाया गया है कि चूहा स्वयं को शुरु से ही कमजोर, दुर्बल, कायर कहता है इसलिए सिंह उसे सबकी सेवा करने का कार्य सौंपता है और उससे कहता है - "चूहे, तू बार-बार अपने को छोटा क्यों कहते हो ? तू देखने में छोटा जरूर हो पर तुझमें अनेक विशेषताएँ हैं। तू जंगल, खेत, मैदान, शहर और कस्बे में भी रह सकता है। तू पहाड़ पर भी रह सकता है और खाई में भी। तू सर्दी, गर्मी और वर्षा सबका मुकाबला कर सकता है। तेरा पेट भी बहुत छोटा है, इसलिए तू कुछ भी खाकर अपनी भूख मिटा सकता है।" (जंगलतंत्रम -पृष्ठ-२० से)

इन खूबियों के साथ चूहे में और भी अनेक विशेषताएँ हैं जैसे चूहा एक छोटा प्राणी भले ही परन्तु उसमें गजब की शक्ति है तभी तो वह गणेशजी की सवारी है, वह सिंह की पूरी सत्ता

बना और गिरा सकता है, अपने वर्ग के अन्य प्राणियों के साथ - और सहयोग से बड़े - बड़े आंदोलनों को सफल बनाकर सिंह मोर और नाग को तबाह कर सकता है। वास्तव में देखा जाए तो अन्न उपजाने, सड़क-भवन-शहर- कल कारखाना, अत्याधुनिक साजो-सामान बनाने से लेकर अखबार-मीडिया आदि को चलाने वाला, देश की अर्थव्यवस्था को संभालने वाला आम आदमी अर्थात् चूहा ही है।

उपन्यास में चूहे की एक और खासियत नजर आती है कि वह शुरु-शुरु में स्वभाव से बहुत भोला है जिसका नाजायज फायदा सिंह - मोर - नाग तीनों उठाते हैं लेकिन जैसे-जैसे उपन्यास की कथा आगे बढ़ती है, उसे अपनी शक्ति का अहसास होता है वह काफी होशियारी समझदारी से काम लेने लगता है, अवसरवादियों के साथ रहते-रहते वह खुद भी अवसर का लाभ उठाना सीख गया है तभी तो वह सिंह द्वारा दिए गए प्रलोभन, प्रेस के जंगलीकरण करने तथा सरकारी विज्ञापन के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लेता है और इसके बदले अपने पूरे वर्ग के साथ चुनाव में उसका साथ देता है। लेकिन चुनाव जीतने के बाद जब सिंह, मोर और नाग के साथ मिलकर अपना रंग दिखाने लगता है। परिणामतः समस्त चूहा वर्ग त्राहि-त्राहि कर उठता है तो चूहा अपनी विरादरी के सभी वन्य प्राणियों को एकत्रित कर सबके सामने सिंह की सारी करतूतें उजागर करता है, मोर - नाग का भंडाफोड करता है। इनके खिलाफ सभी प्राणियों में बगावत की आग धधका देता है जिसके प्रकोप से कोई नहीं बच पाता, चारों ओर अशांति फैल जाती है। चूहे का यह आंदोलन सिंह-मोर और नाग को भी सोचने पर विवश कर देता है कि अब चूहा छोटा भले ही है परन्तु कमजोर नहीं, वह एटम बम से कहीं ज्यादा खतरनाक है।

इस प्रकार, निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उपन्यास 'जंगलतंत्रम' का चूहा पूरे कथानक के केन्द्र में है क्योंकि उपन्यास हो या यथार्थ जीवन शोषण करने वाले अनेक हैं परन्तु शोषित, वंचित, दबा-कुचला चूहा वर्ग अकेला ही है जिसके इर्द-गिर्द उपन्यास की कथा साकार रूप में बुनी गई है।

१.५ सारांश

जंगलतंत्रम उपन्यास की रोचकता और समकालीन परिवेश से जुड़े तथ्यों को किस बखूबी से लेखक श्रवणकुमार गोस्वामीजी ने प्रस्तुत किया है, यह हम उपन्यास के दीर्घ अध्ययन से समझ चुके है, जिस प्रकार पौराणिक कथा के माध्यम से उपन्यास में पात्रों की संकल्पना प्रस्तुत की है और व्यंग्यात्मक तरीके से ताना शाही व्यवस्था पर तंज कसा है वह मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक भी है।

१.६ संदर्भ सहित व्याख्या (उदाहरण सहित)

"भगवन्, यदि मैं उनके साथ चला जाऊँ, तो वे लोग मुझे मार डालेंगे, क्योंकि मैं एक छोटा-सा निरीह प्राणी हूँ। सच्ची बात तो यह है कि मुझ पर सिर्फ नाग की ही नहीं, बल्कि मोर और सिंह की भी बुरी नजर है। क्या प्रभु आप यह चाहेंगे कि संसार में छोटे और निर्बल प्राणियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए।" (पृष्ठ १५)

munotes.in

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठ्यपुस्तक 'जंगलतंत्रम' उपन्यास से लिया गया है जिसके लेखक श्रवणकुमार गोस्वामी हैं।

प्रसंग :

उद्धृत अवतरण का प्रसंग यह है कि नाग द्वारा मित्रता का नाटक करते हुए सबसे दुर्बल प्राणी चूहे को निगलने की कोशिश हुई है जिसमें चूहा बाल-बाल बच निकलता है पर उसकी पूँछ कट गई है, जिसकी शिकायत लेकर वह भगवान शिव के पास जाता है। शिवजी क्रमशः नाग, मोर और सिंह से उनके कुकृत्यों का कारण सुनते हैं और सबको दंडित करते हुए मर्त्यलोक में भेज देते हैं। चूहा शिवजी से पूछता है कि उसे क्यों दंडित कर मर्त्यलोक भेज रहे है तो शिवजी कहते हैं कि अत्याचारी से ज्यादा बड़ा अधिकारी अत्याचार सहने वाला होता है इस पर चूहा उद्धृत कथन कहता है कि जंगल में सभी उसके शत्रु ही है कैसे उसका अस्तित्व बचेगा? यही इस उद्धरण का प्रसंग है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण जब शिवजी सभी जानवरों - सिंह, मोर, नाग और चूहा आदि को दंडित करते हुए मर्त्यलोक में भेजते हैं तो चूहा शिवजी से कहता है कि वह इन सभी प्राणियों में अधिक छोटा-सा निरीह, निर्बल प्राणी है। उसके ऊपर सिंह-मोर-नाग सभी हावी रहते हैं, सभी उससे सबल हैं, उसके शत्रु हैं, सबकी बुरी नजर चूहे पर है, ये लोग उसे मार डालेंगे। चूहे को उनके साथ जंगल जाते हुए अपने अस्तित्व के मिट जाने का अंदेशा होता है।

तात्पर्य यह है कि सिंह रूपी राजनेता, मोर रूपी अधिकारी वर्ग और नाग रूपी व्यापारी - पूंजीपति वर्ग के साथ आम आदमी कभी अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करता, क्योंकि ये तीनों वर्ग निहायत स्वार्थी होते हैं, आम जनता का सदैव शोषण करते हैं। इनके अन्याय, अत्याचार, अनैतिक आचरण और शोषण से आम आदमी के अस्तित्व और अस्मिता पर, सुरक्षा पर सदैव खतरे के बादल मंडराते रहते हैं। अपनी यही मनोदशा चूहा रूपी आम आदमी अपने ईश्वर के समक्ष प्रकट करता है।

विशेष :

१) प्रस्तुत अवतरण शोषक और शोषित वर्ग दोनों को बखूबी प्रस्तुत करता है।
२) भाषा शैली सरल, सहज, सरस और पाठको को बाँधे रखने वाली है।

संदर्भ सहित व्याख्या के संभावित प्रश्न -

१) "मेरी तो वे पच्चीस कीमती रातें सुहाने सपने देखते-देखते गुजर गई थीं, जब मैंने यह कहानी लिखी थी। मगर आज वे सपने कहाँ दिखाई देते हैं? वे पूरी तरह टूट चुके हैं।"- (पृष्ठ-१)

२) "अब तुम लोग यहाँ रहने के योग्य नहीं। मुझे यह भी नहीं मालूम था कि तुम लोगों के ह्रदय में छल-कपट, पाप और हिंसा के भाव समा गए हैं।" - (पृष्ठ - १४)

३) “अत्याचारी से ज्यादा बड़ा अपराधी वह होता है जो अत्याचार को सहता है। तेरा अपराध यही है।” - (पृष्ठ १५)

४) “तू निर्बल नहीं। तू इन सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। जिस दिन तुझे अपनी शक्ति का वास्तविक ज्ञान हो जाएगा, उसी दिन ये सब लोग तेरे आगे घुटने टेक देंगे।” - (पृष्ठ-१५)

५) “मैं तो मेहनत कर ही नहीं सकता। मैं सिर्फ किसी के गले से लिपट सकता हूँ। इसका मुझे काफी अनुभव भी है।” (पृष्ठ - १६)

६) “चूहे को नाग निगल सकता है, नाग को मोर मार सकता है, और मोर को मैं। यहाँ सभी कमजोर हैं, लेकिन मैं सबसे ज्यादा बलवान और बड़ा हूँ।” (पृष्ठ - १७)

७) “जंगलतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जो जंगल के लोगों की है, जंगल के लोगों के द्वारा संचालित है और जंगल के लोगों के लिए है।” (पृष्ठ - २२)

८) “जंगलतंत्र की राजभाषा जंगली-भाषा होगी, पर अभी काम चलाने के लिए मोर-भाषा का प्रयोग उस समय तक किया जाएगा, जब तक कि जंगली भाषा का पूरा विकास नहीं हो जाता।” (पृष्ठ - २२)

९) “जंगलतंत्र का मतलब एक ऐसा राज्य होता है, जिसपर जंगल के सभी लोगों समान अधिकार हो। इस राज्य में हम सभी बराबर है।” (पृष्ठ - २८)

१०) “मेरे पास दौलत है और आपके पास मेहनत। दौलत और मेहनत से अर्थात हम दोनों मिलकर मजे में अखबार निकाल सकते हैं।” (पृष्ठ - ३८)

११) “इस जंगल में किस चीज की कमी है? यहाँ नदियाँ हैं, पहाड़ हैं, फलवाले वृक्ष हैं, खेत हैं, हरेभरे चारागाह हैं। यहाँ की सबसे बड़ी दौलत यहाँ की खाने हैं - जो सोना उगलती है। फिर भी यहाँ के लोग भूखे, नंगे, अशिक्षित और दुखी क्यों हैं?” (पृष्ठ - ४५)

१२) “चुनाव जीतने के लिए भाई, बहुत-कुछ करना पड़ता है। झूठ, गुंडागर्दी और छल-बल की सहायता लेना अब एक आम बात हो गई है। अपने विरोधियों को ठंडा करने के लिए ये कुछ भी कर सकते हैं।” (पृष्ठ - ५४)

१३) “मेरा किसी भी पार्टी से कोई संबंध नहीं है। मैं तो चुपचाप पेड़ पर बैठे-बैठे तमाशा देखता रहता हूँ, इसीलिए कहता हूँ कि कौन सच्चा और कौन झूठा - यह तागा लगाना कठिन है।” (पृष्ठ - ५५)

१४) “तू अपनी शक्ति को पहचान। दूसरे की जयजयकार करना और किसी के पीछे-पीछे चलने की आदत छोड़ एक बार तू उनके आगे चलने की कोशिश कर, जिनके पीछे तू अब तक चलता रहा है।” (पृष्ठ - १०१)

१५) “जिस तरह झाडू से गंदगी दूर की जाती है, उसी तरह तू अपने वोट से उन सबका सफाया कर सकता है जो तेरे दुश्मन हैं।” (पृष्ठ - १०२)

munotes.in

१.७ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

दीर्घोत्तरीय प्रश्न तथा टिप्पणियों के लिए संभावित प्रश्न -

१) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास का उद्देश्य लिखिए।

२) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में निहित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

३) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास की प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डालिए।

४) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के माध्यम से समकालीन भारतीय परिवेश कि समीक्षा कीजिए।

५) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के आधार पर सिंह रूपी राजनेताओं की स्वार्थपरता पर प्रकाश डालिए।

६) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के माध्यम से मोर वर्ग रूपी अधिकारी वर्ग और नाग वर्ग रूपी पूंजीपति वर्ग की स्वार्थपरता व चमचागिरी पर प्रकाश डालिए।

७) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के आधार पर सिंह, मोर, नाग और चूहा का चरित्र चित्रण कीजिए।

१.८ लघुत्तरीय प्रश्न

ग) दीर्घोत्तरीय प्रश्न तथा टिप्पणियों के लिए संभावित प्रश्न -

१) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास का लेखक कौन है ?

उत्तर - श्रवणकुमार गोस्वामी

२) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास की कहानी बच्चों को कौन सुनाता है ?

उत्तर - नानी

३) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास कब प्रकाशित हुआ था ?

उत्तर - १९७९ में

४) नाग किसके गले में लिपटा रहता है ?

उत्तर - शिवजी के गले में

५) सिंह किसकी सवारी है ?

उत्तर - पार्वतीजी का

६) मोर किसकी सवारी है ?

उत्तर - कार्तिकेयजी का

७) चूहा किसी सवारी है ?

उत्तर - गणेशजी का

munotes.in

८) सिंह, मोर, नाग और चूहे के बीच कैसा संबंध है ?

उत्तर - शत्रुता का

९) सिंह किसका प्रतीक है ?

उत्तर - भारत के राजनेता का

१०) मोर किसका प्रतीक है ?

उत्तर - भारत के अधिकारी वर्ग का

११) नाग किसका प्रतीक है ?

उत्तर - पूँजीपति या व्यापारी वर्ग का

१२) चूहा किसका प्रतीक है ?

उत्तर - आम आदमी का प्रतीक

१३) पच्चीस राते किसका प्रतीक है ?

उत्तर - आजादी के बाद २८ वर्षो का प्रतीक

१४) मोर भाषा किसका प्रतीक है ?

उत्तर - अंग्रेजी भाषा का प्रतीक

१५) जंगली भाषा किसका प्रतीक है ?

उत्तर - हिन्दी भाषा का प्रतीक

१६) जंगल किसका प्रतीक है ?

उत्तर - भारत देश का

१७) जंगलराज किसका प्रतीक है ?

उत्तर - वर्तमान के सड़ते-गलते प्रजातंत्र का

१८) गिरगिट किसका प्रतीक है ?

उत्तर - बुद्धिजीवी वर्ग का

१९) मंगलवाद किसका प्रतीक है ?

उत्तर - समाजवाद का प्रतीक है ?

२०) जंगल के पहले सिंह को मारना किसका प्रतीक है ?

उत्तर - भारत से अंग्रेजों को भगाने का प्रतीक है

❖❖❖❖

munotes.in

२

जंगलतंत्रम उपन्यास समकालीन परिवेश

इकाई की रूप रेखा

२.१ इकाई का उद्देश्य

२.२ प्रस्तावना

२.३ उपन्यास का परिवेश

२.४ उमन्यास में निहित समस्या

२.५ सारांश

२.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

२.७ लघुत्तरी प्रश्न

२.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी निम्न लिखित मुद्दों से अवगत होंगे -

१) श्रावण कुमार गोस्वामी ने किस प्रकार जंगली पशुओं से राज से राज और समाज व्यवस्था को जोड़ा है।

२) पूँजी पति वर्ग द्वारा किस प्रकार आम जनता का शोषण होता आ रहा है।

३) राजनीतिक षड़यंत्रो से अमीर और गरीबी के बीच बढ़ती खाई।

२.२ प्रस्तावना

प्रेमचंद काल में लिखा गया यह तत्कालीन समय की राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त तानाशाही को दुर्शाता है, और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी लोकशाही सिर्फ कागजों पर लिखि कालि स्याहो के मात्र है, जो जन-जन से कोसों दूर सिर्फ पूँजी पति की गृह स्वामिनी मात्र है, गरीब तो अब भी परतंत्रता से भिन्न भिन्न भाँति जुझ रहा है।

२.३ उपन्यास का परिवेश

उपन्यास 'जंगलमंत्रम' में उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी ने जंगली पशु-पक्षियों को प्रतीक बनाकर आजादी के बाद के पहले पच्चीस वर्षों के त्तकालीन राजनीतिक अराजकता को जगजाहिर करने का सआल प्रयास किया है। सैंकड़ो वर्षो की गुलामी से लंबे वर्ष तक चले संघर्ष त्याग-बालिदान-आंदोलन के परिणामस्एरूप आजदी मिली। स्वतंत्रता की लड़ाई में जितना त्याग-बलिदान नेताओं ने दिया, उतना ही योगदान आम-आदमी ने भी किया। परन्तु जब आजदी मिली तो राजनेता करके सुख-आनंद का जीवन जीने लगे, राजनेता-प्रशासन और पुंजीपति आपसी मिली-भगत से अपनी-अपनी जेबे भरने लगे, आम आदमी का शोषण करने लगे। आजादी के बाद भी आम-आदमी के हिस्से में गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, कुपोषण, बेरोजगारी, तंगहाली और नरकीय जीवन के अलावा कुछ हाथ नहीं लगा। आजदी के लगभग पच्चीस वर्ष बाद भी उनकी स्थिती में कोई सुधार नहीं हुआ बल्कि उनकी ही नहीं पूरे देश की हालत बद से बदतर होती चली गई। भारत देश की पूरी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को इस उपन्यास के माध्यम से समझा जा सकता है।

इस उपन्यास में लेखक श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने अत्यंत सहजता व स्पष्टता से दर्शाया है कि त्तकालिन भारतीय राजनीतिक तंत्र किस कदर सड़ चुका था। उपन्यास में तमाम जीव-जंतुओं मसलन सिंह-मोर-नाग-चूहा-गिरगिट आदि के माध्यम से शोषित-पीडित आम जनता के विरूद्ध पुँजीवादी-सामंती गठजोड़ तथा उसकी तथाकथित लोकतांत्रिक प्रणाली की जनता विरोधी नीतियोंको उजागर किया है, पर्दाफाश किया है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि सिंह रूपी राजनेताओं का नैतिक पतन किस प्रकार हुआ, मोर रूपी भ्रष्ट अफसर-शाही ने आम जनता को कितना बेवकुफ बनाकर लूटा-खसोटा; उनका जीवन बर्बाद किया, नाग रूपी बड़े-बड़े पूंजीपतियों ने आम जनता का कितना शोषण किया; कितना तबाह किया, गिरगिट रूपी बुद्धिजीवी वर्ग ने झूठी-बनावटी-दिखावटी क्रांन्तिधर्मिता ने कितनों को दिग्भ्रमित किया। भारतीय राजनीति की विसंगतियों - विड़ंबनाओं पर आधारित उपन्यास में नोट के बदले वोट, झूठे आश्वासन, झूठे नारेबाजी, झूठे प्रलोभन, अनीतिपूर्ण प्रशासकीय व्यावस्था में तह तक व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक षड़यंत्र से उत्पन्न त्रासदपूर्ण परिस्थितियों को बखूबी दर्शाया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'जंगलतंत्रम' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें भारत की सड़ती गलती प्रजार्तंत्रिक व्यवस्था का बखूबी चित्रण हुआ है।

२.४ उपन्यास में निहित समस्या

उपन्यास 'जंगलतंत्रम' में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त लगभग पच्चीस वर्षों में भारतीय राजनीति में हुए अवमूल्यन, विडंबनाओं - विद्रूपताओं - विकृतियों को अत्यन्त यथार्थपरक ढंग से उजागर किया गया है। किसी भी प्रजातांत्रिक देश के लिए जनता के मन में सरकार के प्रति अविश्वास, झूठा आश्वासन घातक होता है। भ्रष्टाचार देश को खोखला बना देता है, सारे राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, पूँजीपति वर्ग मिलकर आज-जनता को खूब लूटते हैं परिणामतः अमीर और अमीर, गरीब और गरीब हो जाता है, अमीरी और गरीबी की यह खाई आजादी के बाद से आज तक नहीं पट पाई है।

लेखक उपन्यास 'जंगलतंत्रम' में लोकतंत्र को दीमक की चाटती इस समस्या की तरफ आकृष्ट करते हैं कि जनता के रक्षक किस तरह अब भक्षक बन चुके हैं। राजनेताओं, अधिकारियों, पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों के रग-रग में भ्रष्टाचार कैंसर की तरह समा चुका है। हकीकत यह है कि सत्ता के शीर्ष से लेकर नीचे तक के सभी लोग भ्रष्टाचारी-रिश्वतखोर बन चुके हैं। जो जितने बड़े मंत्री-अधिकारी या पूँजीपति हैं वे उतने ही अधिक अनैतिक, पथ भ्रष्ट, कपटी, छली, व्यभिचारी-दुराचारी बन चुके हैं। इस तरह की भ्रष्टाचार की समस्या को समाज में लगे दीमक, कोढ़ और कैंसर की संज्ञा दी जा सकती है।

उपन्यास में नाग और सिंह की साँठ-गाँठ, उनकी बातचीत यह इंगित करती है कि सत्ता की सहमति से पूंजीपति वर्ग कालाबाजारी, जमाखोरी, वस्तुओं की कीमतों में मनमाना इजाफा करके अपनी तिजोरियाँ भर रहे हैं। राजनेताओं का संरक्षण पाकर इन्होंने बड़े-बड़े उद्योग-धंधे लगाए है, चूहे वर्ग जैसे मजदूरों के श्रम का शोषण करके बिना परिश्रम के अथाहअकृत धन कमाए हैं। मोर जैसे अधिकारी वर्ग इन पूंजीपतियों से रिश्वत लेकर अपना बैंक बैलेंस, घर-बंगला, गाड़ी तमाम ऐशो आराम की चीजों से अपना घर भर रहे हैं। यही पूंजीपति वर्ग चुनाव आते ही राजनेताओं को हर तरह का आर्थिक सहयोग प्रदान कर इन्हें चुनाव में जितवाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं ताकि सत्ता में आते ही उनकी चाँदी हो जाए। वे फिर से मनमाने ढंग से, गलत नीतियाँ अपनाकर भी सरकार की मदद से अधिक से अधिक धन बटोर सके।

'जंगलतंत्रम' उपन्यास में इस समस्या को भी बखूबी दर्शाया गया है कि राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा मसलन बाढ-भूकम्प या सुनामी के वक्त सरकार द्वारा या अन्य स्त्रोतों द्वारा दिए जानेवाले राहत कार्यो में जमा राशियों, खाद्यान्नों को आम जनता तक पहुँचाने के लिए सरकारी अधिकारी कितने उतावले रहते हैं। पर कैसे उस राहत को आम जनता तक पहुँचाने के बजाय खुद ही हड़प लेते हैं, उपन्यास में प्रत्यक्ष दिखाया गया है। ये लोग आपदा से ग्रस्त लोगों का हक मार जाते हैं, युद्ध के समय सुरक्षा कोष की जमापूँजी ही नहीं, फौजियों की वर्दी, राहतकार्य का सामान भी उन तक नहीं पहुँचाते हैं। फौजियों के साथ-साथ आम आदमी के राशन का कालाबाजारी कर अपनी तिजोरियाँ भरते हैं। इस प्रकार आम आदमी के शोषण की कोई सीमा नहीं रह गई क्योंकि वह एक साथ सिंह-मोर-नाग जैसे राजनेताओं, अधिकारियों और पूँजीपतियों द्वारा एक साथ सताया जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपन्यास 'जंगलतंत्रम' के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार, राजनेताओं कि स्वार्थपरता, स्वातंःसुखाय की प्रवृत्ति, अधिकारी वर्ग की चमचागिरी-जी-हुजुरी-स्वार्थपरता कि प्रवृत्ति, पूँजीपति या व्यापारीवर्ग की जमाखोरी, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, तीनों वर्ग द्वारा आम जनता की शोषण करने की प्रवृत्ति, आम आदमी द्वारा स्वयं को दीन-हीन शोषित-शापित बने रहने की समस्या को, उनके द्वारा अपनी शक्ति पहचानने के बाद उत्पन्न समस्या को अपने पाठकों तक पहुँचाना उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य है।

२.५ सारांश

जंगल तंत्रम उपन्यास के माध्यम से हमने राजनीतिक भ्रष्ट व्यवस्था, कालाबाजारी, घूस खोरी, जमाखोरी, अत्याचारों से त्रस्त, दीन, हीन, शोषित आम जनता और उनकी कठनाईयों का सखोल अध्ययन किया है और व्यंग्य के माध्यम से यह जाना कि किस प्रकार अपने स्वभाव से व्यक्ति अपने कर्मो को परिणिति देता है अमीर गरीबों का शोषण कर और अमीर बन जाता है वहीं गरीब अपने स्वभाव वश शोषित और दीन-हीन बनता जाता है।

२.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) भारत की आजादी के पच्चीस वर्ष बाद भारतीय राजनीति में व्याप्त विसंगतियों, विडंबनाओं, विद्रुपताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

२) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के शीर्ष की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

३) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

४) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था का दर्पण है। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

५) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में भारत की राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार किस प्रकास दर्शाया गया है ? लिखिए।

६) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के माध्यम से चूहा वर्ग अर्थात आमआदमी की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

७) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास भारतीय लोकतंत्र को समझने के लिए एक अनूठी रचना है। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

८) भारतीय लोकतंत्र में व्याप्त राजनेता, अधिकारी और व्यापारी वर्ग सांठ-गाँठ और आम आदमी के साथ उनके संबंधों पर प्रकाश डालिए।

२.७ लघुत्तरीय प्रश्न

१) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में कायर, सुविधाभोगी पलायनवादी और दुर्बल किसे कहा गया है?

उत्तर - चूहा को

२) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में अखबार कौन निकालता है?

उत्तर - नाग और चूहा मिलकर निकालते है

३) सिंह ने घुंघरू की माला क्यों पहना था?

उत्तर - सिंह को ज्योतिषी ने घुंघरू कि माला पहनने को कहा था

४) सिंह जंगल में क्या लाना चाहता था?

उत्तर - मंगलवाद (समाजवाद)

५) नाटकशास्त्र के आचार्य कौन थे?

भरतमुनि

६) नाग का गोदाम लुटकर किसने उसमें आग लगाया था?

उत्तर - जुलूसवालों ने

७) 'जंगलतंत्रम' उपन्यास की कथा कितने रातों में पूरी हुई है?

उत्तर - २५ रातों में

८) उपन्यास में जंगलिस्तान किसका प्रतीक है?

उत्तर - पाकिस्तान का

९) चुनाव प्रचार के लिए गाड़ीयाँ कहाँ से खरीदी जाती है?

उत्तर - सेना से

१०) गिलहरी को पदक लेने के लिए कहाँ बुलाया जाता है –

उत्तर - राजधानी में

❖❖❖❖

३

आज भी खरे हैं तालाब

i) **पाल के किनारे रखा इतिहास**

ii) **नीव से शिखर तक**

- अनुपम मिश्र

इकाई की रूपरेखा :

३.१ इकाई का उद्देश्य
३.२ प्रस्तावना
३.३ लेखक परिचय
३.४ पाल के किनारे रखा इतिहास
३.५ नीव से शिखर तक
३.६ सारांश
३.७ संदर्भ सहित व्याख्या
३.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
३.९ लघुत्तरीय प्रश्न

३.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई द्वारा लेखक अनुपम मिश्र के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं रचनात्मक शैली पर प्रकाश डालना।
- निबंध 'आज भी खरे हैं तालाब' के माध्यम से विद्यार्थियों को तालाब का महत्व समझाना।
- निबन्ध का सारांश बताते हुए संभावित प्रश्नों के विषय में बताना।
- 'तालाब' हमारी संस्कृति ही नहीं, अपितु पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक है, इस पर विचार रखना।

३.२ प्रस्तावना

अनुपम मिश्र द्वारा रचित निबन्ध 'आज भी खरे हैं तालाब' भारत के परंपरागत तालाबों एवं जलप्रबंधन से संबंधित है, जिसे इन्होंने अनेक वर्षो के गहन-क्षेत्र-अनुसंधान के पश्चात लिखा है। इस पुस्तक में भव्य, सुंदर तालाबों के निर्माता, गुमनाम शिल्पकारों के योगदान को अंधेरे से निकालकर सबके समक्ष रखने का श्रेय निबन्धकार को ही जाता हे, जिन्हे बदलते समय के साथ भुला दिया गया था। इस पुस्तक में तालाब बनने के पीछे की कहानी, उसकी उपयुक्त जमीन की खोज से लेकर उसे बनाने की विधि, विकास और महत्व सबको बहुत

munotes.in

वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'आज भी खरे हैं तालाब' कुल नौ अध्यायों में विभक्त है। अंत में संदर्भ दिया गया है। हमारे पाठ्यक्रम में कुल पाँच अध्याय ही हैं। अत: इन्ही पाँच अध्यायों के आधार पर इकाई की रूप रेखा तैयार की गई है।

३.३ लेखक परिचय

'आज भी खरे हैं तालाब' निबन्ध के निबन्धकार अनुपम मिश्र देश के प्रसिद्ध लेखक, संपादक, छायाकार और गाँधीवादी पर्यावरणविद् थे। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार भवानी प्रसाद मिश्र और पत्नी सरला मिश्र के यहाँ सन् १९४८ में अनुपम मिश्र का जन्म महाराष्ट्र के वर्धा में हुआ। इन्हे १९६८ में दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त हुई। इन्होंने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनचेतना - जागृति और सरकारों का ध्यान आकर्षित करके उसे अपनी रचनाधर्मिता से संपूर्ण विश्व के समक्ष रखा। ये पर्यावरण संरक्षण की दिशा में तब सक्रिय थे, जब भारत देश में पर्यावरण संरक्षण का कोई विभाग भी नहीं खुला था। इन्होने बिना किसी सरकारी सहयोग के पर्यावरण संरक्षण, नदी पुनर्जीवन, परंपरागत जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। तालाब संरक्षण के संदर्भ में ही इन्होंने 'आज भी खरे हैं तालाब' जैसे पुस्तक को सन् २००९ में साकार स्वरूप दिया जिसके लिए इन्हे वर्ष २०११ में देश के प्रतिष्ठित सम्मान 'जमनालाल बजाज' पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त इन्हें सन् १९९६ में देश के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार 'इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार', २००७-२००८ में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चंद्रशेखर आजाद राष्ट्रीय पुरस्कार, 'कृष्ण बलदेव वेद पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। इनकी अनेक रचनाओं का अनेक भाषाओं सहित बेल लिपि में भी अनुवाद हुआ है। इन्होंने आजीवन बाढ़ के पानी के प्रबंधन और तालाबों द्वारा उसके संरक्षण का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हुए १९ दिसंबर सन् २०१६ को अपनी अंतिम सांस ली।

'आज भी खरे हैं तालाब' निबंध के पाँच अध्यायो क्रमशः 'पाल के किनारे रखा इतिहास', 'नींव से शिखर तक', 'संसार सागर के नायक', 'तालाब' का सारांश अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत ही दिया गया है।

३.४ 'पाल के किनारे रखा इतिहास'

'पाल के किनारे रखा इतिहास' शीर्षक की शुरुआत एक कथा के माध्यम से होती है। एक गाँव में चार भाई कूड़न, बूढ़ान, सरमन और कौरांई खेती करते थे। वे सुबह तड़के उठकर अपने खेत में काम करने के लिए चले जाते थे। दोपहर में कूड़न की बेटी खेत में पोटली में भोजन लेकर जाती थी। एक दिन खेत में खाना लेकर जाते समय उसे रास्ते में एक नुकीले पत्थर से ठोकर लग गई थी। वह गुस्से में आकर उस पत्थर को दरांती से उखाड़ने की कोशिश करती है परन्तु जैसे ही दरांती पत्थर के संपर्क में आई, वह सोने में बदल गई। लड़की तुरंत उस पत्थर को उठाकर खेत में गई और पुरी कहानी अपने पिताजी और चाचा लोगों को सुना दी। लड़की की बातें सुनते ही सभी को अहसास हो जाता है कि उनके हाथ में पड़ा पत्थर कोई साधारण पत्थर नहीं है बल्कि यह पारस पत्थर है। सभी जल्दी ही घर लौट जाते है और विचारमंथन करते हैं कि इस पारस पत्थर का क्या किया जाए? उन्हें लगता है कि कभी-न-कभी देर-सवेर इस पारस पत्थर की खबर राजा तक पहुँच ही जाएगी और राजाज्ञा से छीन ही

ली जाएगी या राजा को न बताने पर उन्हें दंडित भी किया जाएगा। तो क्यों न हम सब खुद ही जाकर राजा को बता दे। यही उनका अंतिम निर्णय होता है। सभी भाई राजा के पास जाकर पारस पत्थर के विषय में बताते हैं। राजा दूरदर्शी था। वह उस पारस पत्थर को नहीं लेता है और उसे कुढ़न को लौटाते हुए कहता है कि जाओ इससे अच्छे-अच्छे काम करते जाना, तालाब बनाते जाना इस प्रकार राजा ने उस पारस के माध्यम से पूरे समाज कल्यण की जिम्मेदारी उन चारों भाइयों को सौंपकर अपना कर्तव्य निभाया।

यह कहानी सच्ची है या ऐतिहासिक या मनगडंत इसका कोई पुख्ता प्रमाण कहीं नहीं मिलता, लेकिन मध्य-भारत के लोगों का मन आज भी इस पर विश्वास करता है। मध्य भारत के पाटन नामक क्षेत्र में आज भी इन चार भाईयों के नाम पर चार तालाब है। बूढ़ागर में बूढ़ा सागर, मझगवां में सरमन सागर, कुआंग्राम में कौराई सागर तथा कुंडम गाँव में कुंडम सागर आज भी मौजूद है। सरमन सागर सबसे बड़ा है, जिसके किनारे तीन बड़े बड़े गाँव बसे हैं। आज भले ही इतिहास ने सरमन, बूढ़ां, कौरांई और कूड़न को भुला दिया गया हो, लेकिन इन लोगों द्वारा बनाए गए तालाबों को इतिहास में सम्मानित स्थान अवश्य मिला है।

देश के प्रत्येक भाग में हजारों हजार तालाबों के निर्माण के कार्य ऐसे ही चलते रहे। इनकी कोई ठीक गिनती नहीं है, कोई रिकॉर्ड नहीं है। इन अनगिनत तालाबों का निर्माण बस इसी तरह चलता रहा। किसी तालाब को राजा-रानी ने बनवाया, तो किसी को साधारण गृहस्थ ने, विधवा ने, या किसी असाधारण साधुसंत ने बनवाया। पर जिस किसी ने इस पुण्य-कार्य को किया वह महाराज या महात्मा कहलाए और समाज ने तालाब बनाने वालों को अमर कर दिया।

समाज में तालाब बनवाने वालों की लंबी श्रृंखला, लंबे दौर तक चली थी। रामायण और महाभारत कालखंड के तालाबों को छोड़ दे तो करीब पाँचवी सदी से पंद्रहवी सदी तक देश के हर एक कोने में तालाब बनते रहे। बाद के समय में कुछ बाधाएँ अवश्य आई, फिर भी तालाब बनाने का कार्य चलता रहा। यही नहीं अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के अंत तक जगह-जगह पर तालाब बनने की बातें सुनाई पड़ती थीं। तालाब बनाने वाले कम हो गए थे। तालाबों की गिनती करने वाले अवश्य सामने आ गए थे। लेकिन समग्र रूप से इनकी गिनती कभी संभव नहीं हो सकी।

आज के रीवा जिले के जोड़ौरी गाँव में २५०० आबादी है, जिसके लिए १२ तालाब हैं। पहले के समय में आबादी को ध्यान में रखकर तालाब का निर्माण किया जाता था। उस समय इस बात पर जोर दिया जाता था कि बारिश कि हर बूँद इकट्ठी कर ली जाए और संकट की घड़ी में आस-पास के क्षेत्रों मे उसे बाँट लिया जाए। देश में सबसे कम वर्षा के क्षेत्र जैसे राजस्थान के थार के रेगिस्तान में बसे हजारों गाँवों के नाम तालाब के आधार पर मिलते हैं। यहाँ गाँवो के नाम के साथ 'सर' जुड़ा होता है। 'सर' का अर्थ 'तालाब'। इन स्थानों पर तालाब गिनने के बजाय गाँवों की संख्या में २ या ३ से गुणा करके तालाबों की अनुमानित संख्या का आकलन किया जाता है।

गाँव-कस्बों-शहरों तक की आबादी में कई गुणा वृद्धि होने के बावजूद वे पानी की व्यवस्था खुद ही करते थे। न कभी किसी प्रान्त से उधार लिया, न ही किसी अन्य शहर के हिस्से का पानी चुराया।

इस प्रकार, वर्षाऋतु में संपूर्ण भारत के लाखो-लाखों तालाब जल से पूर्णतः लबालब इसलिए भर जाते हैं क्योंकि हमारे देश के महान परोपकारियों ने समाज-कल्याण हेतु अनेक - अच्छे - अच्छे पावन-पुनित कार्य किया था।

३.५ "नींव से शिखर तक"

'नींव से शिखर तक' अध्याय में निबंधकार अनुपम मिश्र ने तालाब निर्माण की प्रक्रिया का पूरा विवरण प्रस्तुत किया है। हालाँकि इतिहास के पन्नों में कहीं भी तालाब बनने का विवरण नहीं मिलता है। यह बात भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि जहाँ सदियों से हजारों की संख्या में तालाब बनते रहे, मगर कहीं भी तालाब बनने का विवरण न हो, यह बात सहजता से स्वीकार्य नहीं है।

निबन्धकार अनुपम मिश्र ने अनेक छोटे-छोटे टुकड़ों में मिली जानकारी को जोड़कर तालाब बनने की पूरी प्रक्रिया को पाठकों तक पहुँचाने की सफल कोशिश की है। तालाब बनाने में समाज के सभी वर्गों के सहयोग की आवश्यकता होती है। अनुभवी लोग अपने अनुभव के आधारपर सारी गतिविधियों का संचालन करते हैं। तालाब बनाने की पूरी योजना बनने के पश्चात उपयुक्त, यथोचित स्थान को ढूँढ़ा जाता है। स्थान का चुनाव करते समय कुछ बातों पर ध्यान दिया जाता है जैसे उस तरफ लोग शौच आदि के लिए नहीं जाते हो, मरे हुए जानवरों की खाल वगैरह निकालने की जगह तो नहीं है, वह जगह ढाल के निचले क्षेत्र में हो। पानी जहाँ से आएगा वहाँ की जमीन नरम हो। पानी कहाँ से आएगा, कितना पानी आएगा, उसका कितना भाग कहाँ पर रोका जाएगा, यह सब काम अभ्यस्त आँखों द्वारा पहले ही तय कर लिया जाता है। तजुर्बेदार लोग अपने तजुर्बे से ही सब कुछ भाँप लेते हैं, जैसे पाल कितनी ऊँची होगी, कितनी चौड़ी होगी, कहाँ से कहाँ तक बँधेगी, पानी पूरा भरने पर तालाब को बचाने के लिए अपरा कहाँ बनेगी, वगैरह-वगैरह।

गाँव के सभी लोग एक अनपूछी ग्यारस के दिन तालाब के लिए चुनी गई जगह पर इकट्ठे होते हैं। रोली, मौली, हल्दी-कुमकुम, अक्षत के साथ साथ मिट्टी का पवित्र डला रखकर भूमिपूजन किया जाता है। वरूण देवता का स्मरण करते हुए देश की समस्त नदियों का आह्वाहन करते हुए श्लोक एवं मंत्रोच्चारण द्वारा उनकी पूजा की जाती है। इसके बाद इसी शुभ मुहूर्त में पाँच लोग फावडे लेकर पाँच परात मिट्टी खोदकर निकालते हैं, सबका मुँह मीठा करवाने के लिए गुड़ बाँटा जाता है। फावड़े के माध्यम से ही चारों तरफ निशान लगाकर तालाब का नक्शा बना लिया जाता है। पाल से कितनी दूरी पर खुदाई होगी, यह काम भी इसी शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी अनपूछी ग्यारस के दिन संपन्न हो जाता है। अब एक दो दिन बाद जब भी सबको सुविधा होगी, फिर से काम शुरु होगा।

इस दरम्यान अभ्यस्त निगाहें सबकुछ मन ही मन हिसाब लगा लेती हैं कि कितना बड़ा तालाब होगा, कितने लोग लगेंगे, कितने औजार कुदाल आदि लगेंगे, कितने मन मिट्टी खुदेगी, पाल पर कैसे मिट्टी डलेगी ?

फिर एक दिन डुगडुगी बजती है, सभी गाँव वाले एक साथ तालाब की जगह पर एकत्रित होकर तालाब की खुदाई आरंभ करते हैं। सभी लोग एक साथ काम पर आते हैं और

वापस जाते हैं। सैकड़ों हाथ मिट्टी को दबाने का कार्य बैलों द्वारा लिया जाता हैं, पानी से सिंचाई करते हुए बैलों को चलाते है, इस प्रकार सैकड़ों हाथ तत्परता से चलते है जिससे आसार धीरे-धीरे उठते जाते हैं। सबको पुरे दिन गुड़-पानी मिलता रहता है, गाँव नजदीक रहने पर लोग भोजन करने घर जाते हैं अन्यथा वही भोजन करते हैं।

तालाब के निर्माण में पाल की मजबूती, चौड़ाई, ऊँचाई पर विशेष ध्यान देना होता है, क्योंकि पाल ही तालाब की रक्षा करता है। वही तालाब का पालक है। मिट्टी क कच्चा काम पूरा होते ही पक्के काम की शुरुआत होती है। तालाब की रक्षा करने वाली पाल की रक्षा के लिए नेष्टा बनाया जाता है। नेष्टा वह जगह होती है, जहाँ से तालाब का अतिरिक्त पानी पाल को बिना नुकसान पहुँचाए बह जाता है। नेष्टा बनाते समय पाल से नीचे होना चाहिए। पाल और नेष्टा के बनते ही तालाब का आगर बनकर तैयार हो जाता है। अनुभवी आँखे पुनः एक बार आगौर से आनेवाला पानी आगर की क्षमता के अनुकूल होना चाहिए। काम पूरा होते ही आखिरी बार डुगडुगी बजती है। सबलोग तालाब के पाल पर इकट्ठे होते है। अब आगौर पर स्तंभ लगाकर, पाल पर घटोइया देवता की प्राण प्रतिष्ठा करके अनपूछी ग्यारस को तालाब बनाने का संकल्प साकार हो उठता है। आगर के स्तंभ पर गणेश जी और नीचे सर्पराज बिराजते हैं। घटोइया बाबा घाट पर बैठकर पूरे तालाब की रक्षा करेंगे। आज के दिन सबको भोजन करवाकर प्रसाद भी दिया जाता है। तालाब को एक सुंदर नाम दिया जाता है। यह नाम लोगों के मन पर अंकित हो जाता है। मगर नामकरण के साथ काम खत्म नहीं होता। जब हथिया नक्षत्र में वर्षा के पानी से तालाब भर जाता है तो सब लोग पुनः तालाब पर एकत्रित होते हैं। अभ्यस्त आँखें पूरे तालाब, पाल आगौर और नेष्टा का मुआयना करती हैं। लोग पाल पर चलते हुए बाँसों से, लाठियों से छेदों, दरारों की दवा-दबाकर भरते हैं। इस प्रकार आज अनाम हाथों द्वारा एक सामाजिक कार्य तालाब बनाने का कार्य पूरा हुआ।

३.६ सारांश

इस इकाई में हमने 'आज भी खरे है तालाब' निबंध संग्रह के अध्ययन के तहत सर्व प्रथम लेखक अनुपम मिश्रा के जीवन परिचय के विषय में जाना तत्पश्चात निबंध संग्रह में निहित दो निबंध का विस्तृत अध्ययन किया कि तालाब बनाने की अवधारणा आज से नहीं वरन् पुरातन काल से चली आ रही है इस कार्य में राजा-महाराजा और प्रजा किस प्रकार सहयोग से तालाब का निर्माण करते थे और इस कार्य को रीति-नीति से पूर्ण कर परोपकारी और सद्कर्मो में नीहित मानते थे।

३.७ संदर्भ सहित व्याख्या (उदाहरण सहित)

"किस्सा आगे बढ़ता है। फिर जो कुछ घटता है, वह लोहे को नहीं बल्कि समाज को पारस से छुआने का किस्सा बन जाता है।"

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठ्य पुस्तक 'आज भी खरे हैं तालाब' निबंध के प्रथम अध्याय 'पाल के किनारे रखा इतिहास' से लिया गया है। इसके निबंधकार अनुपम मिश्र हैं।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण का प्रसंग यह है कि सैकड़ों वर्ष पहले कूड़न, बूढ़ान, सरमन और कौंराई चार भाई अपने खेतों में काम करने जाते थे। दोपहर में कूड़न की बेटी भोजन लेकर आती थी। एक दिन अकस्मात दोपहर में खाना लेकर जाते समय कूड़न की बेटी के माध्यम से चारों किसान भाइयों को पारस पत्थर मिला। इतने बहुमूल्य पत्थर को पाकर चारों भाई घबराकर उसे राजा को समर्पित करने का निर्णय लेते हैं परन्तु राजा वह पारस पत्थर लेने के बजाय, उससे तालाब बनवाने जैसे धर्म-कर्म के कार्य करने, उसे समाज-कल्याण में खर्च करने का आदेश दिया गया है। यह अवतरण उसी संदर्भ में लिखा गया है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से लेखक अनुपम मिश्र यह कहना चाहते हैं कि जब चारों किसान बंधु राजा को पारस पत्थर सौंपने जाते है तो राजा मार्ग में मिले उस पारस पत्थर को लेने से इंकार करता है और कहता है कि जाकर इस पारस पत्थर को समाज-कल्याण समाज हित में तालाब बनवाने जैसे अच्छे - अच्छे काम के लिए उपयोग करो। चारों भी ऐसा ही करते हैं। चारों भाई आस-पास के क्षेत्रों में चार बड़े-बड़े तालाबों का निर्माण करवाते हैं और यह सिलसिला अनवरज चल पड़ता है। इसी संदर्भ में लेखक कहते हैं कि किस्सा आगे बढ़ता है। फिर जे कुछ भी घटता है, वह लोहे को नहीं बल्कि समाज को पारस से छुआने का किस्सा बन जाता है। कहने का तात्पर्य है कि पारस को यदि लोहे से स्पर्श करवाओ, तो यह लोहा पारस के संपर्क में आते ही स्वर्ण (सोना) बना जाता है। ठीक वैसे ही पारस पत्थर को समाज से स्पर्श करवाने में समाज का विकास होता है, समाज में तालाब, कुँए, बावड़ी, सड़क, मंदिर, विद्यालय आदि बनता है जो सोने से कहीं अधिक मानव जीवन के लिए उपयोगी है।

विशेष :

लेखक अनुपम मिश्र द्वारा रचित यह निबंध अपने आप में एक अनूठा प्रयास है।

संदर्भ सहित व्याख्या -

१) जिस किसी ने तालाब बनाया, वह महाराज या महात्मा ही कहलाया। एक कृतघ्न समाज तालाब बनाने वालों को अमर बनाता था और लोग भी तालाब बनाकर समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते थे।

२) आज तालाबों से कट गया, समाज उसे चलाने वाला प्रशासन तालाब की सफाई और साद निकालने का काम एक समस्या की तरह देखता है और वह इस समस्या को हल करने के बदले तरह-तरह के बहाने खोजता है।

३) नए लोग जैसे तालाबों को भूलते गए, वैसे ही उनको बनाने वालों को भी। भूले-बिसरे लोगों की सूची में दुसाध, नौनिया, गोंड, परधान, कोल, ढीमर, ढींवर, भोई भी आते हैं, एक समय था जब ये तालाब के अच्छे जानकार माने जाते थे।

४) एक कृतज्ञ समाज तालाब बनाने वालों को अमर बनाता था और लोग भी तालाब बनाकर समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते थे।

५) किस्सा आगे बढ़ता है। फिर जो कुछ घटता है, वह लोहे की नहीं बल्कि समाज को पारस से छुआने का किस्सा बन जाता है।

६) "जाओ इससे अच्छे-अच्छे काम करते जाना, तालाब बनाते जाना।"

७) यह कहानी सच्ची है, ऐतिहासिक है - नहीं मालूम। पर देश के मध्य भाग में एक बहुत बड़े हिस्से में यह इतिहास को अँगूठा दिखाती हुई लोगों के मन में रमी हुई है।

८) जिस दौर में ये तालाब बने थे, उस दौर में आबादी और भी कम थी। यानी तब जोर इस बात पर था कि अपने हिस्से में बरसने वाली हरेक बूँद इकट्ठी कर ली जाय और संकट के समय में आस-पास के क्षेत्रों में भी से बाँट लिया जाए। वरूण देवता का प्रसाद गाँव अपनी अँजुरी में भर लेता था।

९) आखिरी बार डुगडुगी पिट रही है। काम तो पूरा हो गया है पर आज फिर सभी लोग इकट्ठे होंगे, तालाब की पाल पर। अनपूछी ग्यारस को जो संकल्प लिया था, वह आज पुरा हुआ है।

३.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबंध का उददेश्य लिखिए।

२) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबन्ध के माध्यम से निबन्धकार क्या कहना चाहता हैं? लिखिए।

३) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबन्ध के शीर्षक की सार्थकता प्रतिपादित कीजिए।

४) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबन्ध लेखक अनुपम मिश्र की अनूठी और बेजोड़ रचना है। कैसे? निबन्ध के आधारपर लिखिए।

५) 'पाल किनारे रखा इतिहास' किस इतिहास की पुष्टि करता है? निबंध के आधारपर लिखिए।

६) 'नींव से शिखर तक' निबन्ध के आधारपर तालाब की संरचना पर प्रकाश डालिए।

३.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न / अति लघूत्तरीय प्रश्न

१) 'आज भी खरे हैं तालाब' किस विधा की रचना है?

उत्तर - निबंध विधा की।

२) 'आज भी खरे हैं तालाब' के लेखक कौन है?

उत्तर - अनुपम मिश्र

३) 'आज भी खरे हैं तालाब' में कूड़न कितने भाई थे?

उत्तर - चार भाई थे - कूड़न, बूढ़ान, सरमन और कौंराई

४) कूड़न की बेटी को रास्ते में क्या मिला था?

उत्तर - पारस पत्थर मिला था।

५) कूड़न और उसके भाई पारस पत्थर किसे देने गए थे?

उत्तर - राजा को देने गए थे?

munotes.in

६) राजा ने कूड़न से पारस पत्थर को लौटाते हुए क्या कहा ?

उत्तर - राजा ने कहा 'इससे अच्छे-अच्छे करम करते जाना, तालाब बनाते जाना।'

७) बूढ़ासागर कहाँ है ?

उत्तर - बूढ़ागर में है ?

८) वरूण देवता प्रसाद के रूप में क्या बाँटते हैं ?

उत्तर - वर्षा का जल रूपी प्रसाद बाँटते है।

९) अनपूछी ग्यारस को कौन-सा काम शुरु होता था ?

उत्तर - अनपूछी ग्यारस को तालाब की खुदाई का मुहूर्त तय होता था।

❖❖❖❖

munotes.in

४

आज भी खरे हैं तालाब

iii) **संसार सागर के नायक**

iv) **तालाब बाँधता धरम सुभाव**

v) **आज भी खरे है तालाब**

इकाई की रूपरेखा :

४.१ इकाई का उद्देश्य
४.२ प्रस्तावना
४.३ संसार सागर के नायक
४.४ तालाब बाँधता धरम सुभाव
४.५ आज भी खरे हैं तालाब
४.६ सारांश
४.७ संदर्भ सहित व्याख्या
४.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
४.९ लघुत्तरीय प्रश्न

४.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी -

- संसार सागर के नायक निबंध के अध्ययन से यह जान सकेंगे कि तालाब निर्माण में किन लोगों का योगदान रहा है।
- तालाब बाँधता धरम सुभाव अध्ययन के माध्यम से जानेंगे कि तालाब बनाने का कार्य किस प्रकार धर्म से जुड़ा हुआ है।
- आज भी खरे है तालाब निबंध के अध्ययन से यह जानेंगे कि परतंत्र काल में किस प्रकार अँग्रेजो ने तालाबों पर अपना अधिकार जताया और सब कुछ अपने हक में ले लिया।

४.२ प्रस्तावना

लेखक अनुपम मिश्र की लेखनी से उद्भव आज भी खरे है तालाब यह निबंध संग्रह समाज में पर्यावरण और जल स्त्रोत की जो हानि हो रही है उसे दर्शाता है और लेखक की चिंता इसके माध्यम से अभिव्यक्त हो रही है यही कारण है कि यह संग्रह लेखक के अथाह अनुसंधान की देन है जो सबको सीख दे रही है लेखक ने यह भी कहा है कि आज हम हर तरह का इतिहास जानने को उत्सुक है फिर वह कोई एतिहासिक धरोहर हो राजा-महाराजाओं का काल हो या स्वतंत्रता संग्राम की कहानी हर एक इतिहास को जानने उसे समझने का कुतुहल

अनुसंधान कर्ताओं में है लेकिन तालाब जो हमारा महत्वपूर्ण जलस्त्रोत है उसके बारे में किसी को जानने की कुतुहलता दिखाई नहीं देती और न ही तालाब का महत्व अभी तक कोई समझ पाया है लेखक ने 'आज भी खरे है तालाब' संग्रह के माध्यम से तालाब से जुड़े सभी मुद्दों की ओर हमारा ध्यान इंगित किया है।

४.३ "संसार सागर के नायक"

'संसार सागर के नायक' शीर्षक के अंतर्गत मिश्रजी ने उन ताम अनाम लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है, जिनका तालाब निर्माण में सराहनीय योगदान रहा है। वे अनाम लोग न किसी जाति, धर्म, संप्रदाय या क्षेत्र में बँधे थे, बस समाज में अपनी अमूल्य सेवा देते रहे। सवाल यह उठता है कि जब सब जगह लाखों की संख्या में तालाब स्थित हैं तो उन्हें बनाने वाले भी हजारों की संख्या में रहे होंगे। इन राष्ट्र निर्माताओं को आज के समाज के सुशिक्षित लोगों ने कैसे भुला दिया, यह बात लेखक को आसानी से समझ नहीं आती। आज जो अनाम-गुमनाम हो गए हैं, कभी समाज में उनका बड़ा मान-सम्मान था, उनकी दूर-दूर तक ख्याति थी। इन लोगों को तालाब बनाने की शिक्षा कभी जाति के विद्यालय में, तो कभी जात से हट कर एक विशेष पाँति में दी जाती थी। लोग तालाब निर्माता को बड़े सम्मान से गजधर कहकर पुकारते थे। गजधर यानि कि गज को धारण करने वाला। मगर ये गजधर सिर्फ तीन हाथ की लोहे की छड़ लेकर घूमनेवाले मिस्त्री ही नहीं बल्कि समाज की गहराई को माप लेने की क्षमता रखते थे। ये समाज के वास्तुकार थे। गाँव-समाज-नगर के नवनिर्माण, रख-रखाव की जिम्मेदारी गजधर के कंधों पर होती थी। वे किसी नए काम को शुरु करने से पहले योजना बनाकर, लागत निकालते तथा काम में लगने वाली सामग्री इकट्ठा करते। कार्य पूरा होने पर उनके जजमान अपने सामर्थ्य के हिसाब से धन-मान-सम्मान में सरोपा भेंट करते थे। गजधर की ही तरह सिलावट या सिलावटा नामक जाति के लोग भी वास्तुकला में बहुत निष्णात थे। सिलावटा शब्द शिला यानि पत्थर से बना हु है। ये आज भी राजस्थान के पुराने शहरों में रहते हैं। सिंध, कराची के क्षेत्रों में भी सिलावटों का भरा-पूरा मुहल्ला वहाँ इन्हें भी गजधर कहा जाता था। अलग-अलग क्षेत्रों में उनके नाम भले अलग-अलग थे परन्तु सबका काम एक समान ही था।

गजधरों में गुरु-शिष्य परंपरा में काम सिखाया जाता था। नए हाथों को पुराने अनुभवी हाथ इस प्रकार सिखाते थे कि कुछ समय बाद 'जोड़िया' यानी गजधर के विश्वसनीय साथी बन जाते थे। एक अनुभवी गजधर बिना औजारों को हाथ लगाए, सिर्फ जगह देखकर यह समझ पाते थे कि कहाँ क्या करना है। उनके मौखिक निर्देशों पर सारा काम चलता रहता। ऐसे सिद्ध लोग 'सिरभाव' कहलाते थे। सिरभाव सिर्फ आम या जामुन लकड़ी की सहायता से भूजल की तरंगों के संकेत पकड़कर पानी की ठीक जगह बता देते थे। आज भी कई सरकारी क्षेत्रों में कंपनियाँ पानी की जगह पता लगाने के लिए इनकी सेवा लेती हैं।

मध्य प्रदेश में यहीं सिलावट सिलाकार कहलाते थे तो गुजरात में सलाट। कच्छ क्षेत्र में गजधर गईधर के नाम से जाने जाते थे। पतरोट और टकारी जाति के लोग पत्थर के कामों के अच्छे जानकार थे और साथ-साथ तालाब निर्माण का काम भी करते थे।

सोनकर या सुनकर लोग राजलहरिया भी कहे जाते थे। वे अपने को रघुवंश के सम्राट सगर के बेटों से जोड़ते थे। ऐसी मान्यता है कि अश्वमेघ यज्ञ के लिए छोड़े गए घोड़े की चोरी हो

जाने पर सगर पुत्रों ने उसको ढूँढ़ निकालने के लिए सारी पृथ्वी खोद डाली थी और अंत में कपिलमुनि के क्रोध के पात्र बन बैठे थे। उसी शाप के कारण सोनकर तालाबों में मिट्टी खोदने का काम करके पुण्य कमाने लगे।

बुलई, तालाब की जगह का चुनाव करते समय बिना बुलाए आते थे। इनको गाँव की हर एक जानकारी होती थी, जैसे पहले कहाँ-कहाँ तालाब, बावड़ी थी, कहाँ और बन सकते हैं। मालवा क्षेत्र में बुलई की मदद से सब जानकारी रकने में बाकायदा दर्ज की जाती थी और यह रकबा हरेक जमींदारी में सुरक्षित रहता था। बुलई कहीं ढेर, कही मिर्धा कहलाते थे जो जमीन की नाप-जोख, हिसाब-किताब और जमीन के झगड़ों का निपटारा करते थे। इन्हीं श्रृंखलाओं में विभिन्न छोटे-छोटे महत्त्वपूर्ण कार्य करने वालों की सूची में चुनकर, दुसाध, नौनिया, परधान, कोल, ढीवर, भोई, कोरिया कोली, अगरिया, माली, परिहार, भील, भिलाले, सहरिया, मीणा, बंजारे, गोंड, कुड़न, कोहली, ओढ़ी, सोनपुरा, महापात्रे, खरिया, मुसहर लुनिया, डांढी, संथाल, गावडी, नीरघंटी, चितपावन ब्राह्मण, पुष्करण ब्राह्मण, आदि जाति के असंख्य लोगों ने समाज हित में अपना जीवन समर्पित किया, अपने - अपने स्थान पर अपने - अपने स्तर पर सामाजिक विकास का कार्य किया, इनमें तालाब निर्माण करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था। सब जगह तालाब बनाने वाले ये लोग अनाम हो गए, गुमनामी में खो गए। लाखों-लाख तालाब शून्य में से प्रकट नहीं हुए थे, लेकिन उन्हें बनाने वाले लोग आज शून्य बना दिए गए हैं।

४.४ "तालाब बाँधता धरम सुभाव"

'तालाब बाँधता धरम सुभाव' शीर्षक में निबन्धकार अनुपम मिश्र ने यह बताया है कि किस प्रकार तालाब का स्वभाव धर्म से बँधा हुआ है, तालाब अपने धर्म के माध्यम से समाज से कैसे जुड़ा हुआ है। लेखक यह भी कहते हैं कि हम तालाब को निर्जीव कैसे मान सकते हैं, उसके चारों और जीवन रचा बसा है। सुख–दुख हर परिवार, हर समाज का अभिन्न अंग है। अकाल के रूप में जब दुख आता है तो सभी लोग मिलकर तालाब का निर्माण करते हैं। छठवीं सदी में बिहार के मधुबनी इलाके में आए भीषण अकाल के समय पूरे क्षेत्र के गाँवों ने मिलकर ६३ तालाब बनाए गए थे। मधुबनी में आज भी इन तालाबों को, जो कि आज भी मौजूद हैं; लोग कृतघ्न भाव से उन दिनों को याद करते हैं। समाज में कई बार तालाब बनवाने पर पुरस्कार के रूप में राजाओं द्वारा लगान माफ कर दिया जाता था, तो कई बार दंड विधान में भी तालाब बनवाने का उदाहरण मिलता है। बुंदेलखंड तथा राजस्थान की पंचायतों में कुछ इसी प्रकार के दंड विधान मिलते हैं। दंड के रूप में गलती करने वालों को कुछ पैसा ग्रामकोष में जमा करवाया जाता था, जिससे तालाबों का निर्माण करवाया जा सके।

इसी प्रकार गड़ा हुआ कोष मिलने पर उसका उपयोग भी परोपकार के कार्यों में अर्थात् तालाब बनवाने या उसकी मरम्मत करवानें में किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि एक बुंदेलखंड के महाराजा छत्रसाल के बेटे को गड़ा हुआ धन मिला था, तो पिता के आदेश पर पुत्र ने पुराने तालाबों की मरम्मत करवाई तथा कई नए तालाब बनवाए। कुछ इसी प्रकार की मान्यता अनेक स्थानों पर है कि किसान अमावश्या तथा पुर्णिमा के दिन खेत में काम करने नहीं जाते हैं, उस दिन वे अपने क्षेत्र के तालाब आदि की देखरेख व मरम्मत जैसे सामाजिक कार्यो में समय देते हैं। समाज में श्रम भी पूँजी है और लोग उसी पूँजी को निजी हित के साथ सार्वजनिक हित में भी लगाते हैं। साल के ग्यारह पूर्णिमाओं को श्रमदान के लिए रखा जता है पर पूस मास की पूर्णिमा पर तालाब के रख-रखाव, देखभाल के लिए धान या पैसा एकत्रित किया जाता करते हैं।

इस तरह जमा किए गए धान का दान करते हैं। इस तरह जमा किए गए धान को ग्राम कोश में रखा जाता है तथा उसका उपयोग तालाब या अन्य सार्वजनिक स्थानों की मरम्मत के लिए किया जाता है।

वैसे तो सार्वजनिक तालाबों में सबका श्रम और पूँजी लगती ही थी, मगर निहायत निजी किस्म के तालाबों में भी सभी सार्वजनिक स्थलों जैसे घुड़साल, बाजार, मंदिर, श्मशान भूमि, वेश्यालय, अखाड़ों और विद्यालयों की मिट्टी डालकर सार्वजनिक स्पर्श को पूरा करवाया जाता है। तालाबों की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, उस दिन बहुत बड़ा उत्सव होता है। तालाब का नामकरण होता है। छत्तीसगढ़ में तालाबों के विवाह की परंपरा है। विवाह के दिन क्षेत्र के सभी लोग तालाब के पाल पर इकट्ठे होते हैं। आसपास के मंदिरों की मिट्टी, गंगाजल, अन्य पाँच-सात कुओं या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पुरा होता है। विवाह के बाद ही उसका जल उपयोग में लाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म-कर्म का, अनेक तीर्थ स्थानों के दर्शन करने का अत्यन्त महत्त्व है। सबका मेल करवाता है तीर्थस्थल परन्तु जो लोग किसी कारणवश इन तीर्थ स्थलों पर नहीं जा पाते थे, वे अपने यहाँ तालाब बनाकर पुण्य कमाते थे और महात्मा या पुण्यात्मा कहलाते थे। इस तरह से तालाब भी एक तीर्थस्थल है, जहाँ मेले लगते हैं। तालाब हमेशा ही लोगों के मन में बसा रहा। कहीं-कहीं खासकर वनवासी समाज के तन में भी बसा हुआ नजर आता है। सहरिया वनवासी शबरी को अपना पूर्वज मानते हैं। सीता जी से विशेष संबंध होने के कारण वे लोग अपनी पिंडलियों पर सीता बावड़ी बहूत चाव से गुदवाते हैं। अब जिनके मन में, तन में तालाब बसा हो, तो वे लोग तालाब को केवल पानी के एक गड्ढ़े के रूप में नहीं देख सकते। उनके लिए तालाब एक जीवंत परंपरा है, परिवार है और उसका संबंधी है।

यदि समय पर पानी नहीं बरसे, तो लोग वर्षा के देवता इंद्र तक अपनी बात पहुँचाने के लिए उनकी पुत्री काजलमाता की पूजा-याचना करते हैं ताकि पुत्री काजलमाता का प्रभाव पिता इंद्र पर पड़े और वर्षा से धरती तृप्त हो जाए। वर्षा से तालाब का लबालब भर जाना भी एक बड़ा उत्सव बन जाता है। लोगों का हुजूम तालाब के पास के पास पहुँच जाता हे। तालाब की अपरा चल निकलती है, यह बात समाज में खुशी, उमंग और आनंद संचारित करती है, उत्सव-महोत्सव बन जाती है। इन्हीं दिनों झूलून त्योहार में मंदिरों की मूर्ति तालाब तक लायी जाती है और पूरे श्रृंगार के साथ भगवान का झूला झुलाया जाता है।

कोई भी तालाब अकेला नहीं है। वह अपने जल-परिवार का एक सदस्य है तथा उसमें सबका पानी है और उसका पानी सबमें। कुछ इसी प्रकार का उदाहरण हमें जनन्नाथपुरी मंदिर के पास बिंदु सागर में देखने को मिलता है। दूर-दूर से, अलग-अलग दिशाओं से पुरी आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र की नदियों, तालाबों या समुद्रों का थोड़ा सा जल लेकर आते है और उसे विंदुसागर में अर्पित कर देते हें। इस प्रकार विंदु सागर देश की राष्ट्रीय एकता का प्रतीक कहा जा सकता है। पहले राजस्थान में नवरात्र के बाद जब लोग जवारे विसर्जित करने के लिए तालाबों पर एकत्रित होते थे ते पुजारी जी विसर्जन के बाद तालाब में पानी का स्तर देखकर आनेवाले समय की भविष्यवाणी करते थे। मगर बदलते समय के साथ ये सारी प्रथाएँ लुप्त प्रायः हो गई हैं, यह सब तालाबों के प्रति हमारी बढ़ती उदासीनता का परिणाम है।

४.५ "आज भी खरे हैं तालाब"

'आज भी करे हैं तालाब' शीर्षक में निबंधकार अनुपम मिश्र ने तालाबों और उन्हें बनाने वाले नायकों की दुर्दशा पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। अंग्रेजों के आगमन के बाद उन्होंने हर चीज पर अपना अधिकार जमाना शुरु कर दिया, सबकुछ अपने नजरियें से आँक कर अपना अनुभव लोगों पर थोपना शुरु कर दिया। परिणाम स्वरूप राज और समाज के बीच दूरी बढ़ती चली गई। पहले हमारे देश की व्यवस्था में समाज भी सहायक की भूमिका निभाते थे। समाज अपना हित स्वयं तय करता था, उसमें अपनी शक्ति और संयोजन-क्षमता होती थी। मगर अंग्रेजों ने देश और समाज के संबंध को अपने अनुभव के आधार पर पश्चिमी चश्में से देखना शुरु किया। सात समुंदर पार से आए अंग्रेजों को समाज के कर्तव्यबोध का न तो विशाल सागर दिखा, न ही उसकी बूँदे दिखी। उन्होंने अपने अनुभव और प्रशिक्षण के आधारपर यहाँ के तालाबों की संख्या के दस्तावेज खोजने की कोशिश की। लेकिन उनके हाथ जब कुछ नहीं लगा, तो उन्होंने मान लिया कि अब उन्हें ही यहाँ की सारी व्यवस्था करनी पड़ेगी। देश के कई भागों में घूम फिरकर कुछ जानकारियाँ अवश्य प्राप्त की, मगर उनमें कर्तव्य के सागर और उसकी बूँदों को समझ पाने की दृष्टि नहीं थी। इस कारण इन जानकारियों के आधार पर जो नीतियाँ, उसने इस कर्तव्य सागर और बूँदों को अलग-अलग करके रख दिया।

अंग्रेजों के आने के बाद तक लगभग उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ तक कई-कई बड़े तालाब बन रहे थे। जो नायक समाज को टिकाए रखने के लिए यह सब काम कर रहे थे, उन्हें अंग्रेजों की तरफ से बराबर चुनौतियाँ मिलती रहीं। साँसी, भील जैसी स्वाभिमानी जातियों को ठग तथा अपराधी माना जाने लगा। अब अंग्रेजी सरकार कुटिल षडयंत्र के आधार पर पुराने परंपरागत जाँचो को तोड़ना, दुतकारना और उपेक्षा करना आम बात-सी हो गई थी। नतीजा यह हुआ कि पिछले दौर के अभ्यस्त हाथ अब अकुशल कारीगरों की सूची में आ गए। अब वे अनपढ़ असभ्य, प्रशिक्षित माने जाने लगे। आजादी के बाद भी आनेवाली सरकारों से भी उन्हें उपेक्षा ही मिली।

उदाहरण के माध्यम से निबंधकार अनुपम मिश्र ने यह समझाने की कोशिश की है कि कैसे गुणी समाज के हाथों से मैसूर राज का जल प्रबंधन दीना गया। सन् १८०० में मैसूर राज में कुल ३९,००० तालाब थे और उनकी पूर्णतया देखरेख दीवान करते थे। पानी की एक बूँद भी जाया नहीं होती थी। हर साल राज की तरफ से कुछ लाख रूपए की सहायता तालाबों की देख-रेख के लिए दिए जाते थे। राज बदला अंग्रेज राज की तरफ से दी जाने वाली सहायता आधी से भी कम कर दी गई। मगर लोगों ने राज की तरफ से कम मदद देने के बाद भी तालाबों को संभाले रखे। ३२ वर्षों के बाद सन् १८६३ में वहाँ पहली बार पी.डब्ल्यू बना और सारे तालाब लोगों से छीनकर उसे सौंप दिए गए। सबसे पहले तालाब बनाने वाले और उनकी देखरेख करनेवालों से उनकी प्रतिष्ठा हर ली गई, फिर धन, साधन छीने गए और अंत में स्वामित्व भी छीन लिया गया था। सम्मान, सुविधा और अधिकारियों के छीने जाने के बाद लाचार समाज से कैसे कर्तव्य निभाने की उम्मीद की जाती? जब पी. डब्ल्यू. डी. से तालाब की जिम्मेदारी नहीं संभाली गई, तो सिंचाई विभाग बना। सिंचाई विभाग भी जब कुछ न कर पाया तो पुनः पी.डब्ल्यू.डी. के हाथों में तालाब की जिम्मेदारी आ गई। अंततः स्थिति इतनी खराब हो गई कि तालाबों की देखभाल के लिए पहले चंदा माँगे गए, बाद में जबरन वसूली शुरू हो गई।

दिल्ली में भी तालाबों की दुर्दशा कुछ इसी प्रकार थी। अंग्रेजों के आने से पहले दिल्ली में करीब ३५० तालाब थे, मगर सन् १९०० के आते-आते घरों मे नल लगवाये जाने लगे। इस प्रकार अंग्रेजों ने नियंत्रित 'वाटर वर्क्स' से पानी का व्यावसायीकरण कर दिया। यह काम पहले बड़े शहरों से प्रारम्भ होकर धीरे-धीरे छोटे शहरों को भी अपने गिरफ्त में ले लिया गया। मगर केवल पानी के पाइप बिछाने और नल कि टोंटी लगा देने से तो पानी नहीं आएगा। इस समय तक शहरों के तालाबों को पाटकर उनपर नए मोहल्ले, बाजार, स्टेडियम, स्कूल खड़े हो गए थे। अब हालत ऐसे हो गए है कि गाँवों का पानी शहरों में पैसे और ताकत के बल पर लाया जा रहा था। पानी को ट्यूबबेल से निकाला जाने लगा, मगर महँगी बिजली, डीजल के साथ-साथ जल स्तर ऊँचा होना चाहिए।

कुछ इसी प्रकार की हालत इंदौर में भी देखने को मिलती है। इसी इंदौर में बिलावली जैसा तालाब था, जहाँ फ्लाइंग क्लब के गिरे हुए जहाज को ढूँढ़ने के लिए नौसेना के गोताखोर उतारे गए थे। मगर आज बिलावली तालाब एक सूखा मैदान बनकर रह गया है, जहाँ अब तो फ्लाइंग क्लब के जहाज उड़ाए जा सकते हैं। इंदौर के पड़ोस के शहर देवास का किस्सा तो और भी विचित्र है। वहाँ रेलगाड़ी से पानी के टैंकर लाए जाते हैं। टैंकरों का पानी पंपो के सहारे टंकियों में चढ़ता है और फिर जाकर शहर में बँटता है। इस प्रकार रेलभाड़ा, बिजली खर्च सब मिलाया जाए तो और पानी का भाव निकाला जाए तो वह दूध के भाव ही पड़ता है।

उपेक्षा की आँधी में आज भी देश में करीब आठ से दस लाख तालाब भर रहे हैं। वरुण देवता आज भी अपना प्रसाद सुपात्रों के साथ-साथ कुपात्रों में भी बाँट रहे हैं। आज कई तरफ से टूट चुके समाज में तालाबों की स्मृति अभी भी बनी हुई है। भारत के कई क्षेत्रों में आज भी तालाबों के रख-रखाव के कई उदाहरण मिल जाते हैं। जैसे छत्तीसगढ़ के गाँवों में छेर-छेराके गीत गाकर अनाज इकट्ठा करते हैं, फिर उन्हीं से तालाबों की मरम्मत करवाते हैं। आज इन्हीं तालाबों के ऊपर न जाने कितने गाँव, शहर, नगरपालिकाएँ टिकी हुई हैं। सिंचाई विभाग भी इन्हीं तालाबों के दम पर खेतों को पानी दे पा रहे हैं। हाँ, वर्तमान समय में तालाबों का निर्माण कम हुआ है, मगर बिल्कुल बंद नहीं हुआ है। आज भी बीजा की डाह जैसे गाँव के सागर नायक लगातार नए तालाब खोद रहे हैं, पहली बरसात में उन पर रात-रात भर पहरा दे रहे हैं।

४.६ सारांश

इस इकाई में विद्यार्थीयों ने अनुपम मिश्रा लिखित निबंध संग्रह में पाठ्यक्रम में लिये गये पाँच निबंधों में से तीन निबंध संसार से सागर तक, 'तालाब बाँधता धरम सुभाव' और 'आज भी खरे है तालाब' का अध्ययन विस्तृत रूप से किया है इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी निबंध का उद्देश्य, कथानक, निबंध से संबंधित दीर्घोत्तरी व लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

४.७ संदर्भ सहित व्याख्या

१) जिन अनाम लोगों ने इसे बनाया है, आज वे प्रसाद बाँट कर इसे एक सुंदर-सा नाम भी देंगे। और यह नाम किसी कागज़ पर नहीं, लोगों के मन पर लिखा जाएगा।

२) सैकड़ो, हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की, तो दहाई थी बनाने वालों की। यह इकाई, दहाई मिलकर सैकड़ो हजार बनती थी।

३) लेकिन पिछले २०० वर्षो में नए किस्म कि थोड़ी सी पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई, सैकड़ा हजार को शून्य बना दिया।

४) वे योजना बनाते थे, कुल काम की लागत निकालते थे, काम में लगने वाली सारी सामग्री जुटाते थे और इस सब के बदले वे अपने जजमान से ऐसा कुछ नहीं माँगते थे, जो वे न दे पाएँ।

५) गुरु-शिष्य परंपरा से काम सिखाया जाता था। नए हाथ को पुराना हाथ इतना सिखाता, इतना उठाता कि वह कुछ समय बाद 'जोड़िया' बन जाता था।

६) पर पानी अपना रास्ता नहीं भूलता। तालाब हथियाकर बनाए गए नए मोहल्लों में वर्षा के दिनों में पानी भर जाता है और फिर वर्षा बीती नहीं कि इन शहरों में जल संकट के बादल छाने लगते हैं।

४.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'संसार सागर के नायक' निबन्ध के आधार पर तालाब के वास्तुकार-शिल्पकार गजधर के योगदान पर प्रकाश डालिए।

२) 'तालाब बाँधता धरम सुभाव' में लेखक ने किस प्रकार तालाब को धरम सुभाव से जोड़ा है?

३) तालाब बाँधता धरम सुभाव निबंध में लेखक द्‍वारा प्रतिपादित तालाब के महत्व को समझाइए।

४) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबंध के आधारपर तालाब की महत्ता पर प्रकाश डालिए।

५) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबंध के माध्यम से अंग्रेजों के आने के बाद भारत में तालाबों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

६) 'आज भी खरे हैं तालाब' निबन्ध के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि तालाब आज भी खरे हैं।

४.९ लघुत्तरीय प्रश्न

१) तालाब की रक्षा कौन करता है?

उत्तर - घटोइया बाबा करते थे।

२) गजधर के विश्वसनिय साथी को क्या कहा जाता था?

उत्तर – जोड़िया कहा जाता था।

३) तालाब का काम पूरा होने पर गजधर को पारिश्रमिक के अलावा और किससे सम्मानित किया जाता था?

उत्तर - गजधर को सम्मानपूर्वक सरोपा भेंट किया जाता था।

४) जलसूँघा यानी भूजल को सूँघ कर बताने वाले लोग किस लकड़ी का सहारा लेते थे?

उत्तर - आम या जामुन की लकड़ी से सहायता लेते थे।

५)	राजा भोज किसके प्रेम में पड़कर अपना राज काज छोड़ने का निर्णय लेते हैं?

उत्तर - प्रसिद्ध लोकनायिका जसमा के प्रेम में पड़कर निर्णय लेते है।

६)	दक्षिण में सिंचाई के लिए बनने वाले तालाबों को क्या कहते हैं?

उत्तर - एरी कहते हैं।

७)	रामनामी अपने शरीर पर किस नाम का गुदना गोदवाते थे?

उत्तर - रामनाम का गुदना।

८)	गड़ा हुआ कोष मिलने पर उसका प्रयोग कहाँ किया जाल था?

उत्तर - तालाब बनवाने, उसकी मरम्मत करवाने जैसे परोपकारी कार्यो में किया जाता था।

९)	छेरा-छेरी का त्योहार कहाँ मनाया जाता था?

उत्तर - छत्तीस गढ़ में।

१०)	तालाब बनाने वाले क्या कहलाए?

उत्तर - महात्मा या पुण्यात्मा कहलाते थें।

११)	शहरियाँ किसे अपना पूर्वज मानते हैं?

उत्तर - सबरी को मानते थे।

१२)	वर्षा के देवता कौन हैं?

उत्तर - वर्षा के देवता इन्द्र हैं।

१३)	काजल कौन थी?

उत्तर - देवराज इंद्र की बेटी।

१४)	गजधर कौन है?

उत्तर - वास्तुकार तालाब निर्माणकर्ता

१५)	विंदुसागर तालाब कहाँ स्थित है?

उत्तर - उड़िसा के जगन्नाथपुरी मंदिर के पास स्थित है।

१६)	विंदुसागर किसका प्रतीक है?

उत्तर –'राष्ट्रीय एकता का सागर' तथा जुड़े हुए भारत का प्रतीक है?

१७)	पानी क्या नहीं भूलता?

उत्तर - अपना मार्ग / रास्ता नहीं मिलता है।

१८)	बिलावसी तालाब कहाँ स्थित है?

उत्तर - मध्यप्रदेश के इंदौर में स्थित है।

❖❖❖❖

५

कथा एक कंस की

- दया प्रकाश सिन्हा

इकाई की रूपरेखा :

५.१ इकाई का उद्‌देश्य
५.२ प्रस्तावना
५.३ कथावस्तु
५.४ पात्र चरित्र-चित्रण
५.५ सारांश
५.६ संदर्भ सहित व्याख्या उदाहरण सहित
५.७ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
५.९ लघुत्तरीय प्रश्न

५.१ इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई के माध्यम से लेखक दया प्रकाश सिन्हा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालना।
- नाटक के मुख्य पात्रों का पात्रों का परिचय देना।
- ऐतिहासिक - पौराणिक चरित्रों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नई दृष्टि से समझने की कोशिश करना।
- नाटक का सारांश बताते हुए संभावित प्रश्नों के विषय में बताना।

munotes.in

५.२ प्रस्तावना

दया प्रकाश सिन्हा अवकाश प्राप्त आई.ए.एस. अधिकारी होने के साथ-साथ हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक, नाटककार, अभिनेता, निर्देशक, नाटक अध्येता और चर्चित इतिहासकार हैं। २ मई, सन् १९३५ में जन्में दया प्रकाश सिन्हा सन् १९५७ से आजतक अनवरत साहित्य सेवा में सक्रिय हैं। अब तक इनके लगभग दस नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। ये अपने नाटकों को लिखने के बाद उसका मंचन करते है और नाटकों के प्रकाशन के पहले उनको निर्देशित करके संशोधित करते हैं। यही कारण है कि इनके द्‌वारा रचित नाटक हर दृष्टि से संपन्न हैं। अबतक इन्हें इनकी कृतियों के लिए 'साहित्य अकादमी', साहित्य सम्मान 'साहित्य भूषण', 'राम मनोहर लोहिया' सम्मान आदि जैसे अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

लोकप्रिय नाटककार दया प्रकाश सिन्हा द्वारा रचित नाटक 'कथा एक कंस की' आधुनिक हिन्दी नाटकों में मील का पत्थर साबित हुआ है। साहित्यिक और रंगमंचीय दोनों दृष्टि से यह नाटक बहुत समृद्ध संपन्न है। यह नाटक दो अंकों में लिखा गया है तथा कंस के जीवन पर आधारित है। इस नाटक का कंस पौराणिक कथा का कंस नही है। अपितु इस नाटक का कंस इतिहास के तमाम निरंकुश-स्वच्छंद शासकों की नुमान्दगी करता है, प्रतिनिधित्व करता है। इस नाटक में नाटककार ने कंस को सिर्फ खल पात्र के रूप में न दर्शाकर एक सामान्य मनुष्य के गुण-दोषों के साथ प्रस्तुत किया है और बताना चाहा है कि कोई भी मनुष्य सिर्फ अच्छा या सिर्फ बुरा नहीं होता, बल्कि वह अच्छाई-बुराई का समिश्रण होता है। इस पर एक अलग तरह की चिन्तन की आवश्यकता है। लेखक ने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कंस की पौराणिक कथा में अनेक स्थानों पर आवश्यकतानुसार फेर-बदल किया है।

५.३ नाटक की कथावस्तु (नाटक का सारांश)

नाटक में कंस एक निरंकुश-स्वच्छंद शासक है जिसकी हर एक इच्छा आदेश है और आदेश ही नियम है। वह अपनी स्वेच्छाचारिता की सारी पराकाष्ठा पार कर चुका है। वह अपने खिलाफ सिर उठाने वालों के सिर काट देता है, आँखे उठाने वालों की आँखें निकाल लेता हे। अपने सभी विरोधियों और विद्रोहियों को अपने कब्जे में लेकर सब पर एक छत्र अधिकार करता है और उनपर शासन करता है। लेकिन सभी पर एकछत्र राज करने के बावजूद श्रीकृष्ण से भयभीत होकर अपनी मृत्यु की डर से अपने किले के एक छोर से जाए परन्तु श्री कृष्ण से मृत्यु के खौफ के कारण वह अपनी आँखे बंद नहीं करता कि कहीं श्रीकृष्ण आकर उसका वध न कर दें। इसलिए वर्षों से उसकी नींद उड़ चुकी है। कभी-कभार झपकी आने, नींद आने पर वह इतने भयानक सपने देखता है कि डर कर चीख उठता है। उस समय वह स्वयं से प्रश्न करता है आखिर एक साधारण मनुष्य की असाधारण महत्त्वाकांक्षी बनने की कथा, एक साधारण मनुष्य के भगवान बनने की कथा कहाँ से आरंभ होती है? इसके बाद वह अपने अतीत के पन्ने पलटने लगता है, कहानी फ्लेश बैक में चली जाती है।

फ्लेश बैक में अपने अतीत में घटित एक घटना याद करते हैं। एक बार बचपन में जब वे पाँच छहः साल के थे, तो पिता महाराज उग्रसेन ने उनसे पूछा था कि उन्हें कौन-सा अस्त्र शस्त्र सबसे अधिक प्रिय है? तो कंस ने बताया था कि उन्हें सबसे प्रिय वीणा है। यह सुन उग्रसेन अत्यन्त क्रोधित होकर कह बैठे कि तुम पुरुष के वेश में स्त्री हो। इस तरह नन्हें बालक को तिरस्कृत करके वे चले गए।

एक बार की बात है, कंस महाराज उग्रसेन के साथ वन में गए थे। सूर्यास्त के समय पिता ने उन्हें अकेले नरभक्षी जानवरों से भरे वन से राजमहल लौटने का आदेश दिया। आदेश सुनते ही कंस भय से काँप उठे। डर के मारे उसके कपड़े गीले हो गए। पिता उग्रसेन ने उस नन्हें पाँच छहः वर्ष के बालक को बहुत अपमानित किया। एक बार पिता ने पुत्र की धनुर्विद्या की परीक्षा लेने के लिए आँख फूटे रक्त स्रावित बकरे की आँख पर निशाना साधने का आदेश दिया। बेटे कंस ने उस चोटिल बकरे पर वार करने से मना कर दिया क्योंकि उसका ह्रदय करुणा से भर गया था। तब पिता ने भरे दरबार में अपने व्यंग्यवाणों द्वारा अपमानित कर उसके ह्रदय को छलनी कर दिया। जब कंस को अपने खबरी के माध्यम से ज्ञात होता है कि पिताजी अपना उत्तरदायित्व कंस के मित्र वसुदेव को बनाकर उन्हें यादवराज बनाना चाहते हैं तो वह अपने

ससुर मगध नरेश जरासंध के सहयोग से अपने पिताजी के प्रति विद्रोह करते हुए उन्हें कैदखाने में डालकर स्वयं राजा बन जाता है और प्रजा में घोषणा करवा देता है कि महाराज उग्रसेन आत्महत्या कर चुके हैं।

नाटक में स्वाति (पुतना) जो कि कंस को असीम, निश्छल प्रेम करती है, कंस भी उसे चाहता है। स्वाति कंस की हर विषम परिस्थिति में उसकी परछाई बनकर उसे संभालती है। कंस स्वाति का विवाह अपने सेनापति तथा बचपन के मित्र प्रद्योत के साथ करवा देता है ताकि सेनापति प्रद्योत पर स्वाति के माध्यम से कड़ी नजर रखी जा सके। कंस स्वाति को सदैव एक मोहरा बनाकर रखता है और उसके द्वारा भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को जन्में मथुरा के नवजात शिशुओं की हत्या करवाता है। इसी क्रम में स्वाति पूतना के रूप में श्रीकृष्ण की हत्या करने जाती है परन्तु कृष्ण को मारने के लिए लिया हुआ जहर खुद ही खाकर आत्महत्या कर लेती है क्योंकि वह उसका मातृत्व, वात्सल्य उमड़ता है जिससे वह कृष्ण को नहीं मारती। स्वाति के इस धोखे से क्रोधित कंस उसके शव को सरेआम फाँसी पर लटकाकर अपनी क्रूरता से सबको आतंकित करता है। स्वाति की आत्महत्या के बाद वह कभी अपने सेनापति प्रद्योत पर विश्वास नहीं करता। इसलिए अब वह राजमहल को सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने ससुराल मगध के सेनापति वृत्रिघ्न को सौंपता है।

बचपन से वसुदेव और कंस में प्रगाढ़ मित्रता थी। जब कंस को ज्ञात होता है कि उसकी प्राण-प्रिय चचेरी बहन देवकी वसुदेव से प्रेम करती है तो वह बिना विलंब किए उन दोनों का ब्याह रचा देता है। इसके बाद मथुरा की राजगद्दी को लेकर दोनों में विवाद छिड़ जाता है। कुछ यूँ हुआा कि वसुदेव की बहन कुन्ती हस्तिनापुरा नरेश पांडु से व्याही गई थी, अतः वसुदेव का झुकाव हस्तिनापुर से भी अधिक था। यदि वसुदेव को मथुरा की राजगद्दी मिलती, तो वह उसे भी हस्तिनापुर नरेश पांडु को सौंप देता। यही कारण था कि कंस वसुदेव को अपना शत्रु समझकर स्वयं उस गद्दी पर बैठ गया। देवकी अपने भाई कंस को समझाती है कि महाराज जरासंध मथुरा को जीत कर अपना साम्राज्य विस्तार करना चाहते थे, परन्तु हस्तिनापुर नरेश पांडु ने जरासंध के खिलाफ मथुरा की सहायता करने का आश्वासन वसुदेव के तमाम प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही दिया। वसुदेव ने जो कुछ किया वह मथुरा को बचाने के लिए ही किया। लेकिन देवकी की इन बातों का कंस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह अपनी बहन से कहता है कि देवकी को अपने भाई से अधिक आपने पति की बातों पर विश्वास है। दरअसल उसका राज्य जरासंध नहीं अपितु वसुदेव हस्तिनापुर नरेश पांडु की सहायता से हड़पना चाहता था परन्तु उसका यह स्वप्न कंस ने चकनाचुर कर दिया और कंस स्वयं मथुरा की राजगद्दी हड़प लेता है। इसके बाद कंस को जैसे ही यह पता चलता है कि वसुदेव -देवकी का आठवाँ पुत्र कंस की मृत्यु बनकर जन्म लेगा, वैसे ही वह दोनों पति-पत्नी को कारागार में डाल देता है और एक-एक कर उनके सातों पुत्रों की हत्या करवा देता है। वसुदेव ईश्वरीय प्रेरणा से अपने आठवे पुत्र श्रीकृष्ण की रक्षा करते हैं। कंस श्रीकृष्ण से सदैव सजग रहता है।

कंस का विवाह मगध नरेश जरासंध की अत्यन्त सुंदर पुत्री अस्ति के साथ हुआ था। अपने ससुर मगध नरेश जरासंध के सहयोग से, सैन्य-बल से कंस अपने पिता उग्रसेन को राजगद्दी से उतारकर उन्हें कारागृह में बन्दी बनाकर स्वयं राजा बन जाता है। जब कंस को पता चलता है कि विद्रोहियों से वह पूरी तरफ घिर चुका है तब पत्नी अस्ति उसे बताती है उसके पिता जरासंध ने उनकी सुरक्षा हेतु दहेज में मगध के सैनिक भेज दिए हैं। अस्ति यह भली-भाँति जानती है कि आज कंस जो कुछ भी है, उसमें उसके पिता की अहम भूमिका है, वह बार-बार

यह बात कंस को अहसास करवाती है। कंस उसे बरदाश्त नहीं करता और अस्ति को तिरस्कृत करने लगता है, अवहेलना करने लगता है जिसे अपनी राजसी गर्व, दर्प, अभिमान और आत्मसम्मान से भरी अस्ति बिल्कुल सहन नहीं कर पाती और कंस को नपूंसक कहते हुए उसपर बिफर पड़ती है। कंस अपना अपमान सहन नहीं कर पाता और वही अस्ति का गला घोंट कर मार देता है और राज्य में अस्ति को सर्प काटने से मृत्यू की घोषणा करते हुए पूरे राजकीय सम्मान से उसका दाह-संस्कार करने का आदेश देता है। इन तमाम घटनाओं को याद करते हुए कंस को काशी की नाट्यमंडली द्वारा प्रस्तुत नाटक 'नृसिंहावतार' का प्रसंग याद आता है : -

हरिद्रोही नामक नगरी का राजा हिरण्यकश्यपु अत्यंत अत्याचारी, अधर्मी, अन्यायी, घमंडी, शोषक और पापी था। उसके शासन में प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। पूरी धरती काँप उठी थी। उसके शोषण अत्याचार से तंग त्रस्त प्रजा ने उसके अत्याचारों से मुक्ति पाने हेतु ईश्वर की शरण ली। इसके पश्चात् राक्षसी प्रवृत्ति के हिरण्यकश्यपु को भक्त प्रहलाद पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। हिरण्यकश्यपु खुद को ही भगवान समझता था और अपने घर-परिवार समेत पूरी प्रजा से जबरन अपनी पूजा करवाता था। लेकिन उसके पुत्र प्रहलाद ने उसकी उपासना करने - नाम स्मरण करने से इंकार कर दिया। वह भगवान विष्णु का परम भक्त था। पिता ने अपनी बात न मानने वाले प्रहलाद को अनेक-अनेक तरीके से मारने का प्रयत्न किया, जब सकल अत्याचार पुत्र पर अपनी चरम पर पहुँच गया तो भगवान नृसिंह खंबा फाड़कर प्रकट होते हैं और हिरण्यकश्यपु का वध कर संसार को उससे मुक्ति दिलाते हैं। इतना नाटक देखने के बाद कंस अत्यन्त क्रूद्ध-व्यग्र होकर नाटक बंद करवा देता है और अपने राज्य में नाटक और संगीत पर पूरी पाबंदी लगा देता है। साथ ही नाटक मंडली को फाँसी की सजा नगर के बाहर देने का आदेश देता है। इसके साथ ही अपने राज्य में घोषणा करवाता है कि मथुरा में किसी भी भगवान की उपासना, धर्म-कर्म की शिक्षा नहीं दी जाएगी। बल्कि अब कंस ही सबका भगवान है। मंदिरों से भगवान की मूर्ति हटाकर भगवान श्री कंस कि मूर्ति और मंदिरों की स्थापना की जाती है। जो लोग कंस को अपना भगवान मानने से इंकार करते हैं उनके घर-द्वार जला दिए जाते हैं, उन्हें मृत्युदंड की सजा मिलती है। कंस के ऐसे व्यवहार का विद्रोह करने पर मगध सेना बुरी तरह कुचल देती है। कंस पाँच सौ एक महापंडितों द्वारा भगवान श्रीकंस का जाप नगर चौपाल में करवाता है और अपने मंत्री प्रलंब को कंस-धर्म का महापुजारी नियुक्त करता है। इसी दरम्यान एक घटना घटित होती है। कंस के श्वसुर मगध नरेश जरासंध अश्वमेध यज्ञ करते हैं जिसमें घोड़े की सुरक्षा का दायित्व कंस को दिया जाता है। कसं इसे अपने लिए बड़ा सम्मान समझकर, मथुरा का उत्तरदायित्व अपने सेनापति प्रद्योत और परम विश्वासी प्रलंब को सौंपकर मगध चला जाता है और १२ वर्षो तक घोड़े को विजयी बनाए रखने हेतु अनेक राजाओं-महाराजाओं से युद्ध करके, उन्हें पराजित करते हुऐ उनके मुकुट जरासंध की कदमों में रखता है। इसके बाद जरासंध से सम्मानित होकर मगध नरेश जरासंध के अति विश्वासी, अति प्रिय सेनापति के साथ मथुरा लौटता है। वृत्रिघ्न मथुरा की आबोहवा की खबर कंस को देते हुए बताता है कि यहाँ मथुरा-नरेश कंस के प्रति राजमहल समेत पूरी प्रजा ने विद्रोह -बगावत छेड़ दी है। यादवों के हर वर्ग में कंस के प्रति क्रोध, असंतोष, विद्रोह की भावना विस्फोटित हो सकती है। राज्य में संगीत पर निषेध व पाबंदी लगने के बावजूद समस्त यादव युवक अपने साथ बांसुरी रखते हैं। इन सभी का प्रतिनिधित्व कर रहा है नंदकुमार श्रीकृष्ण, जिसे सभी लोग देवकी वसुदेव का आठवाँ पुत्र मानते हैं। यह देखने में काला है पर अत्यंत बलशाही और आकर्षक है। कंस सभी यादव युवकों को दंडित करने का आदेश देता है।

इसके बाद कंस तुरंत प्रलंब को बुलाकर उससे विद्रोह के विषय में सूचना या जानकारी न दिए जाने हेतु पूछताछ करता है। प्रलंब उसे बताता है कि जीवन के अंतिम दिनों में उससे झूठ नहीं बोलना चाहता। वह वास्तव में कंस का विद्रोही बनकर उसका विनाश चाहता है। दरअसल वह महाराज उग्रसेन का अवैध पुत्र है। महाराज उग्रसेन ने आजीवन अपनी वासना की पूर्ति का साधन मेरी माँ को बनाया, परिणामस्वरूप मेरा जन्म हुआ। मैं महाराज उग्रसेन का सबसे बड़ा पुत्र हूँ, परन्तु इस राजगद्दी का उत्तराधिकारी मैं नहीं, अपितु पहले दावेदार आप व दूसरे दावेदार वसुदेव थे। तब मैंने निश्चय किया कि तुम दोनों मे जो राजा बनेगा, उससे अपने अधिकार लेने का प्रतिशोध अवश्य लूँगा। मुझे अपने मृत्यु का भय नहीं। मैंने जानबुझकर तुम्हें ऊँचाईयो पर पहुँचाया ताकि तुम जितनी ऊँचाई से गिरोगे, तुम्हें उतना ही अधिक कष्ट होगा। आज मेरा सपना साकार हो गया है आज सभी तुम्हारे विद्रोही बन चुके हैं, तुम खुब ऊँचाई से गिरकर बिखर रहे हो। श्रीकृष्ण के मारने से पहले ही तुम मर चुके हो, हार चुके हो अपने बनाए घरौंदे में बिल्कुल असहाय-एकाकी-जिन्दगी की भीख माँग रहे हो। प्रलंब के इन बातों से क्रोधित कंस उसे जल्लादों के हवाले कर देता है।

इसके बाद कंस, प्रद्योत को बुलाकर बगावत-विद्रोह की बात पूछता है तो प्रद्योत उसे बताता है कि श्री कृष्ण द्वारा स्वयं सबका नेता बनकर आपके खिलाफ़ विद्रोह करने की सूचना मैंने बार-बार महापुजारी प्रलंब को दी थी परंतु पता नहीं क्यों उन्होंने आपतक यह खबर नहीं पहुँचाई। कंस के आदेशानुसार प्रद्योत जब श्रीकृष्ण को ढूँढ़कर ले आने में असफल होता है तो कंस उसपर बड़ा क्रोधित होता है। प्रद्योत कंस का सामना बिल्कुल निर्भयता से करते हुए कहता है कि क्या तुम अपने जीवन से सचमुच सुखी, संतुष्ट और खुश हो? अब मैंने तुम्हारा निहायती स्वार्थी, घिनौना से घिनौना रूप देखा है। मैंने आजीवन स्वेच्छा से तुम्हारी सेवा की, अब स्वेच्छा से ही मरूँगा। यह कहते हुए वह अपनी कटार से आत्महत्या कर लेता है।

यह देखकर कंस कहता है कि अब तक न जाने कितनी हत्याएँ हो चुकी हैं, शवों के ढेर पर शवों के ढेर लग चुके है, उन सब के नीचे कंस का शव दब गया है। कंस श्रीकृष्ण और उनकी बाँसुरी की धुन से भयाक्रान्त हो उठता है पर उसे यह विश्वास नहीं होता कि महाबली, महापराक्रमी, परमतेजस्वी श्रीकंस भगवान श्रीकृष्ण की बंसी की ध्वनि से भयभीत है। वह मन ही मन सोचता है कि जो इसके विरुद्ध सिर उठाएगा, उसका सिर काट लिया जाएगा क्योंकि वह अपराजय है। पर बार-बार बंसी की ध्वनि से भयाक्रान्त होकर श्रीकृष्ण से जीवन की भीख माँगता सा प्रतीत होता है। नाटक यही समाप्त हो जाता है।

५.४ पात्र चरित्र-चित्रण

'कथा एक कंस की' नाटक के पात्र है। महाराज उग्रसेन, कंस, अस्ति, स्वाति, देवकी, वसुदेव, प्रद्योत, प्रलंब, बाहुक और वृत्रिघ्न। इनमें कथा के मुख्य पात्रों क्रमशः कंस, स्वाति, अस्ति, देवकी, प्रलंब, प्रद्योत, के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है जो निम्नलिखित है -

कंस :

'कथा एक कंस की' नाटक के शीर्षक से ही यह ज्ञात हो जाता है कि इस नाटक का मुख्य पात्र कंस है। इस नाटक का कंस पौराणिक कथा में चित्रित कंस से भिन्न है, क्योंकि लेखक ने कथानक की आवश्यकतानुसार कंस के जीवन में घटित घटनाओं को परिवर्तित किया

है। वास्तव में कंस एक अति महत्त्वाकांक्षी, स्वेच्छाचारी, अन्यायी, अत्याचारी, दुराचारी, अभिमानी, जनता का खून चूसने वाला अति क्रूर शोषक है। वह अपने विरुद्ध सिर उठाने वालों के सिर, आँख उठाने वालो की आँखे काट देता है। वह अपने सभी विरोधियों - विद्रोहियों के दबाकर कुचलकर सभी पर एकछत्र पूरी प्रजा से अपनी पूजा करने पर बाध्य करता है, जो उसकी उपासना नहीं करता, उसको मृत्यू दंड देता है। इसके बावजूद उसे जब से देवकी-वसुदेव के आठवे पुत्र, नंदलाल श्रीकृष्ण की अतुलनीय, अवर्णनीय, चमत्कारिक शक्ति, महानतम ईश्वरीय शक्ति सम्पन्न प्रतिभा का पता लगा है तब से वह मन ही मन अत्यन्त उद्विग्न, बेचैन, अपनी मृत्यू के डर से पूर्णत आशंकित है कि कहीं कृष्ण महल के किसी कोने से निकलकर उसका वध न कर दें। कृष्ण द्वारा अपनी मृत्यु की भय के कारण वह न दिन में चैन से रह पाता है न ही रात को शान्ति से सो पाता है। इस दृश्य को नाटक में बखूबी दर्शाया गया।

कंस बचपन में बहुत शांतिप्रिय, सहज-सुलभ, मधुभाषी, संगीतप्रेमी, वाद्य यंत्र वीणा से प्रेम करने वाला, अस्त्र-शस्त्र से दूरी बनाए रखनेवाला, जंगली-जीवों के प्रति भी सहृदयी, दयालु, कृपालु, विनम्र स्वभाव वाला बालक था, परन्तु पूरे समाज के सामने बार-बार अपने पिता उग्रसेन से डरपोक, कायर, नपुंसक कह कर क्रोधित होने, अपमानित, तिरस्कृत होने के कारण उनकी अवहेलना करने लगता है और अंततः उनका विद्रोह करके उन्हें बंदी बनाकर स्वयं मथुरा के सिंहासन पर विराजमान होता है। कंस निश्चली स्वाति से निश्चल प्रेम करने के बजाय हमेशा उसे एक मोहरे के रूप उपयोग करता है। अपनी बहन देवकी से भी अटूट-असीम प्रेम करता है परन्तु बहन की आठवी संतान द्वारा अपनी मृत्यु की सूचना पाते ही अपने नवविवाहित जुगल जोड़ी देवकी वसुदेव को कारागार की काल कोठरी में डाल देता है। पत्नी अस्ति की हर बात उसे अहंकारपूर्ण लगती है जिसके कारण वह उसका गला घोंट कर मार देता है। उसने अपनी प्रेमिका स्वाति और पत्नी अस्ति दोनों का उपयोग सिर्फ अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया और दोनों को अंततः मृत्यु के घाट उतार दिया क्योंकि किसी का उसके विरोध में बोलना उसे स्वीकार नहीं था।

कंस, हिरण्यकश्यपु और प्रहलाद का नाटक देखने के बाद अपने मथुरा राज्य में संगीत, नाटक और भगवान की पूजा करने पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा देता है, क्योंकि कहीं न कहीं श्रीकृष्ण की महिमा का गुणगान या बखान वह अपने गुप्तचरों द्वारा सुन ही लेता है इसलिए अत्यन्त भयभीत होकर अपने राज्य से भगवान का अस्तित्व समाप्त करने का प्रयत्न करता है और अपनी मूर्ति मंदिरों में स्थापित करवाता है, अपने नाम का जाप करवाता है। हालाँकि वह एक शूरवीर तथा महापराक्रमी योद्धा था, राजा था तभी मगध नरेश जरासंध ने अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की सुरक्षा का दायित्व कंस के कंधे पर सौंपा था, और कंस ने १२ वर्षों तक तमाम बड़े-बड़े राजाओं से युद्ध करके उनको पराजित करके हारे हुए राजाओं के मुकुट जरासंध के चरणों पर रख देता है, जो कि उसकी शूर, वीरता और शक्तिशाली योद्धा का परिचायक है। कंस जिन प्रलंब और प्रदयोत पर अपने राज्य मथुरा का दायित्व सौंपकर जरासंध के अश्वमेध यज्ञ में १२ वर्षो के लिए गया था, वही प्रलंब और प्रद्योत उसके विद्रोही बन जाते हैं। कारण यह था कि दोनों अपने निजी हित के उद्देश्य, स्वेच्छा से कंस के अच्छे-बुरे कर्मों के सहभागी बने थे। अपनी भिन्न-भिन्न कारणों से कंस की छाया बने हुए थे, लेकिन श्रीकृष्ण के मथुरा आगमन से पूर्व ही दोनों महाराज कंस के प्रति विद्रोह करते हैं और इसकी भनक कंस को कानोंकान नहीं लगने पाती। अंततः कंस द्वारा उनका जीवन भी समाप्त होता है। कंस बिल्कुल निस्सहाय, निपट, अकेला, भयाक्रान्त रह जाता है।

स्वाति :

पौराणिक कथाओं में चित्रित पूतना से अलग इस नाटक की पुतना का नारा स्वाति है जो कि एक साधारण यादव कन्या है और कंस से अगाध प्रेम करती है। वह कंस से निश्छल प्रेम करती है। वह अत्यंन्त सहज, स्वाभाविक निश्चल प्रेम करते हुए कंस को अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है। उसका प्रेम सिर्फ त्याग, बलिदान, समर्पण, आत्मोत्सर्ग और प्रतिदान जानता है, उसने अपने इस प्रेम के बदले कंस से कभी कुछ लिया नहीं है। लेकिन कंस ने हमेशा स्वाति के प्रेम का इस्तेमाल ही किया है। उसे अपनी भार्या बनाने के बजाय उसका विवाह अपने बचपन के मित्र सेनापति प्रद्योत से करवा देता है ताकि प्रद्योग पर सदैव नजर बनाए रख सके। कंस के कहने पर स्वाति पूतना राक्षसी का रूप धारण कर श्रीकृष्ण और उनके साथ जन्में सभी शिशुओं की हत्या करने का प्रयास करती हैं जिनमें सिर्फ श्रीकृष्ण बचते है। उन्हें दूध में जहर डालकर पिलाने के पूर्व वही जहर खाकर आत्महत्या कर लेती है क्योंकि वह अब किसी भी तरह कंस के स्वार्थपरक व्यवहार से, सत्ता की दौड़ में उसके साथ भागते-भागते थक चुकी है। जिस कंस के लिए स्वाति अपने निश्छल प्रेम की कुर्बानी करती है वही कंस उसके मरणोपरान्त सरेआम उसके शव को फाँसी पर लटकाने का आदेश देता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस नाटक में स्वाति की अहम् भूमिका है जिसके बिना नाटक की कथा कदापि रोचक नहीं बन पाती।

अस्ति :

'कथा एक कंस की' में अस्ति मथुरा नरेश कंस की भार्या (पत्नी) है तथा मगध नरेश जरासंध की पुत्री है। हालाँकि पौराणिक कथाओं के अनुसार मगध के राजा जरासंध की दोनों पुत्रियों अस्ति और प्राप्ति का विवाह कंस के साथ हुआ था। लेकिन इस नाटक में सिर्फ अस्ति के चरित्र को ही दर्शाया गया है। अस्ति अत्यंत रुपवती, सौन्दर्य व यौवन से भरी हुई पत्नी है तथा अपनी सुन्दरता से कंस को अपनी देह यष्टि से, शारीरिक गठन को दिखाते हुए अपनी और आकृष्ट - आकर्षित करने का सदैव प्रयार करती है।

वह चाहती है कि कंस भयमुक्त होकर जीवन की सारी चिंताएँ त्याग कर एक साधारण व्यक्ति की तरह उससे खूब प्रेम करे। वह यह भी भली-भाँति जानती है कि कंस की सफलता के पीछे उसके पिताजी की अहम भूमिका है। उसे राजगद्दी पर बैठाने से लेकर उसके राज्य की सुरक्षा करने, समृद्धशाली राजा बनाने से लेकर राज्य विस्तार तक हर एक क्षेत्र में पग-पग पर अस्ति के पिताजी ने ही कंस को संभाला है और इसलिए उसे अपने पिताजी पर गर्व है। जब कंस के पिताजी की गर्वीली बातें कहते हुए उसे कायर, भीरु डरपोक कहती है तो कंस उससे चिढ़ जाता है, उसकी अवहेलना करने लगता है जो वह बिल्कुल बरर्दाश्त नहीं कर पाती। वह कंस को नपूंसक कहते हुए उसपर टूट पड़ती है। कंस अपना यह अपमान सहन नहीं कर पाता और अस्ति का गला घोंट कर मार डालता है और जनता में घोषित करता है कि महारानी अस्ति की सर्पदंश (साँप काटने से) से मृत्यु हो गई और पूरे राजकीय सम्मान के साथ इनका अंतिम संस्कार किया जाए। इस प्रकार नाटक में अस्ति की भूमिका भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसके साथ कंस का वार्तालाप अस्ति और कंस दोनों की मनोभावनाओं को समझा जा सकता है।

देवकी :

देवकी कंस की चचेरी बहन है जिससे वह आगाध असीम प्रेम करता है। कंस को जैसे ही पता चलता है कि देवकी, उसके परममित्र वसुदेव से प्रेम करती है, वह तुरंत इस मित्रता को रिश्ते में बदलता है और स्वयं सारथी बनकर बहन देवकी को ससुराल पहुँचाने निकलता है तभी

उसे ज्ञात होता है कि देवकी-वसुदेव की आठवीं सन्तान के हाथों उसकी मृत्यु सुनिश्चित है, वह तुरंत देवकी-वसुदेव को कारागार में डाल देता है। इसके बाद से ही देवकी के जीवन में यातना की कोई सीमा नहीं रह जाती। उसके एक-एक पुत्र को कंस पैदा होते ही जमीन पर पटककर मार देता है। आँखो में बज्राघात के आँसु और आँचल में वात्सल्य का अमृत तुल्य दूध लिए देवकी पुत्र -वियोग को जिस दर्दनाक पीड़ा से गुजरती है उसका वर्णन करना कदापि संभव नहीं हैं। मथूरा कि राजगद्दी को लेकर कंस कर मन मरच उपजे रोष, द्वेश का खंडन करती है। हालाँकि कंस को बहन देवकी द्वारा पति का पक्ष लेना नगवारा लगता है। देवकी की इन बातों का, कि वसुदेव मथुरा का राज्य हड़फ नहीं चाहते थे, बल्कि उन्होंने राजा पांडु की मदद से मथुरा की रक्षा की है, कंस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। श्रीकृष्ण, जिनके हाथों कंस-वध सुनिश्चित है, उसकी माध्यम बनती है देवकी। इस तरह कहा जा सकता है कि 'कथा एक कंस की' नाटक की केन्द्र बिन्दु देवकी ही है।

प्रलंब :

प्रलंब कंस का मित्र है। वह महाराज उग्रसेन की नाजायज सन्तान है। उसकी माँ उग्रसेन की अनेक रखैलों में से एक थी। वह कंस से उम्र में बड़ा था, अत: अग्रज होने के कारण मथुरा का भावी राजा उसे ही होना चाहिए था। लेकिन चूँकि उसकी माँ से महाराज उग्रसेन ने विवाह करके उसे पुत्र का मान-सम्मान या दर्जा कभी नहीं दिया। इस बात की टीस प्रलंब को आजीवन कंस का दुश्मन बना देती है। वह कंस के हर एक कुकृत्य को बढ़ावा देकर उसे सफलता की ऊँचाई की चरम तक पहुँचाकर ऊपर से नीचे ढकेल कर गिरा देना चाहता है। कंस की गैरहाजिरी में जनता में उसके प्रति विद्रोह की भावना भरता है और इसके विषय में कंस द्वारा पूछे जाने पर अत्यन्त निर्भिकता से ऐसे जवाब देता है मानो कफन अपने सिर पर बाँध कर आया हो। उसका कंस के सामने यह स्वीकार करना कि उसने हमेशा से अपने अधिकारों का प्रतिशोध लेने के लिए उसका साथ दिया, उसका सर्वनाश चाहा, दर्शाता है कि वह बहुत निडर, निर्भीक है। अपनी मित्रता की आड़ में अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है। श्रीकृष्ण से भयभीत कंस को देखकर उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। कंस उसकी निर्भिकता को बरर्दाश्त नहीं कर पाता और उसे जल्लादों के हाथों सौंप देता है क्योंकि वह अपने मित्र का विश्वासघात सहन नहीं कर पाता। अंत: इस नाटक में प्रलंब की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

प्रद्योत :

प्रद्योत कंस का अभिन्न मित्र और विश्वासपात्र सेनापति है। बचपन का मित्र होने के कारण वह कंस को भली-भाँति जानता समझता है और उसकी हर एक इच्छा-अनिच्छा का ध्यान रखते हुए राजाज्ञा का अनुपालन करता है। यहाँ तक कि स्वाति कंस की प्रेयसी है, जानते हुए भी उससे विवाह करता है। कंस को सत्ता के ऊँचे शिखर तक पहुँचाने में प्रद्योत की अहम भूमिका है। लेकिन वह कंस के घिनौने रूप से, उसके उदंड, उच्छृंखल, निरंकुश, घमंडी, स्वेच्छाचारी स्वभाव से घृणा करता है। इन तमाम कारणों से प्रद्योत का विद्रोही बनता है। कंस के प्रति जनता के विद्रोहात्मक होने की खबर उसको नहीं देता है। जब कंस, प्रद्योत से श्रीकृष्ण को ढूँढ़ कर लाने का आदेश पाकर भी उन्हें ढूँढ़ कर ले आने में असफल होता है तो कंस अत्यन्त क्रोधित होकर प्रद्योत को खरी-खोटी सुनाता है। प्रद्योत उसके तीखे प्रहारों से तनिक भी भयभीत नहीं होता, बल्कि अत्यन्त निडरता-निर्भीकता से कंस से पूछता है - क्या तुम सचमुच खुश हो, सुखी हो? तुमने जीवन में जो चाहा किया, जो चाहा, पाया। मैंने भी आजीवन स्वेच्छा से तुम्हारी सेवा की, तुम्हारे हर अन्याय को बरर्दाश्त किया लेकिन अब और नहीं। मैंने

स्वेच्छा से तुम्हारी सेवा की, अब स्वेच्छा से ही अपनी मृत्यू का वरण करता हूँ। इतना कहकर वह अपने सीने में कटार मारकर आत्महत्या कर लेता है।

इस प्रकार कंस का अभिन्न मित्र प्रद्योत भी इस नाटक का अभिन्न पात्र है।

५.५ सारांश

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थियों ने 'कथा एक कंस' नामक एकांकी का सम्पूर्ण अध्ययन किया है नाटक के कथानक और पात्र एवं चरित्र चित्रण के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सभी प्रकार के व्याख्यात्मक प्रश्न, दीर्घोत्तरी व लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

५.६ संदर्भ सहित व्याख्या का एक उदाहरण

"सत्ता के शिखर पर हम बिलकुल अकेले हैं। कोई भी ऐसा नहीं जिस पर विश्वास कर सकें। सब सत्ता, अधिकार, धन के लालच में हमारे अपने बने हैं। हम चाहते हैं तुम हमारी सहायता करो।" (पृष्ठ - ५७)

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठयपुस्तक 'कथा एक कंस की' से लिया गया है। इस नाटक के नाटककार दया प्रकाश सिन्हा हैं।

प्रसंग :

प्रस्तुत कथन कंस अपनी प्रेमिका स्वाति से कहता है कि सत्ता के शिखर पर वह नितान्त अकेला है। उसके अपने लोग भी स्वार्थ के कारण ही उससे जुड़े है। कंस को अन्यायी अत्याचारी समझते हैं। सबका झुकाव अब श्रीकृष्ण की तरफ अधिक हो गया है क्योंकि भविष्यवाणी के अनुसार देवकी के आठवे पुत्र के माध्यम से ही कंस का वध होगा। इसलिए कंस का ह्रदय श्रीकृष्णा के भय से पूर्णतः आतंकित - आशंकित और व्यग्र है कि कहीं श्रीकृष्ण उसका वध न कर डालें, इसलिए वह स्वाति से उसकी सहायता माँगता है।

व्याख्या :

नाटककार दया प्रकाश सिन्हा ने अपने इस नाटक 'कथा एक कंस की' के माध्यम से यह दर्शाया है कि जब से कंस ने यह भविष्यवाणी सुनी है कि देवकी-वसुदेव की आठवी सन्तान कंस का वध करेगी, उसके पापों का अंत करेगी, उस दिन से कंस के मन की उद्विग्नता (बेचैनी) की कोई सीमा नहीं है। वह उस दिन से भयाक्रान्त, आंतकित है। उसे अपने चारों तरफ श्रीकृष्ण काल के रूप में नजर आते हैं। वह न दिन में शान्ति पूर्वक रह पाता है और न रात में चैन से सो पाता है। पत्नी अस्ति के पिता मगध के राजा जरासंध की पूरी सहायता लेकर कंस अत्यन्त अहंकारी - निरंकुश होता चला जाता है। इस बात को अस्ति भली-भाँति समझती है, और वह बार-बार कंस के सामने अपने पिता की महानता का बखान करती है जिसके सहारे कंस के इस आचरण से दुखी होकर उसकी औकात याद दिलाती है। इस घटना से कंस के मन में अपनी असुरक्षा, अपने अस्तित्व और अस्मिता का खतरा मँडराने लगता है, मृत्यू का खतरा

तो है ही। ऐसे में कंस अपने बचपन के मित्र और सेनापति से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करता है और प्रद्योत पर नजर रखने के लिए अपनी प्रेमिका स्वाति से कहता है कि सत्ता के शिखर पर वह नितान्त अकेला है। उसके निकटवर्ती सभी लोग स्वार्थी हैं। वह किसी पर विश्वास नहीं कर सकता, प्रद्योत पर भी नहीं। इसलिए वह स्वाति से अनुनय-विनय करता है कि वह उसकी सहायता करे। जब स्वाति उसकी सहायतार्थ तैयार हो जाती है तो वह उसे सौगन्ध खिलाकर, वचन लेकर प्रद्योत से विवाह कर, उस पर नजर रखकर, उसकी पल-पल की जानकारी कंस को देने की सहायता माँगता है।

विशेष :

कंस द्वारा स्वाति से किया गया उपर्युक्त निवेदन उसकी निहायत स्वार्थी, उच्छृंखल प्रवृत्ति, प्रेम के संबंध का तार-तार करने वाली सौगन्ध-वचनवद्धता सिर्फ निजी हित के लिए इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति को, अविश्वास को दर्शाता है।

१) संदर्भ सहित व्याख्या :

१) "इस अटारी से उस अटारी तक, कि थककर नींद आ जाए- एक क्षण के लिए ही सही, जैसे इच्छाओं का क्षितिज सिकुड़ने लगा, सब कुछ सिमटकर केवल एक इच्छा बची है- नींद।" (पृष्ठ - ३५)

२) "क्या पुरुषत्व का अर्थ क्रूरता है? केवल निर्ममता, हिंसा, वध हत्या रक्तपात ही पौरुष का प्रतीक है।।" (पृष्ठ - ३८)

३) "कब सुना था यह अट्टहास? वर्षो पहले, युगों पहले। किन्तु हम इसे भूल नहीं सके। आज भी हमें सुनाई पड़ता है - वैसा ही व्यंग्यमय, तिरस्कार भरा। रोम-रोम को अपमानित, लांछित करता-सा." (पृष्ठ - ३७)

४) हम जन्म से ही कुछ ऐसे हैं। हम सदा से सपने देखते हैं, उस संसार के जिसमें बर्बरता नहीं होगी। सब समान होंगे। मनुष्य में मनुष्य के लिए करुणा होगी। ममता होगी।

५) प्यार की झँकरी डतर पर इतने काँटे हैं यह पहले से जानती तो पैर ही न रखती। माँग लो, जो माँगना चाहते हो। मैं वचनबद्ध हूँ और तुम्हारे प्रेम में पागल। ऐसा अक्सर फिर नहीं आएगा। माँगो।

६) "और जब मेरा पुत्र चल बसा तो मुझे लगा कि यादव माताओं ने मेरा पुत्र मुझसे छीन लिया। मैंने स्वयं अपने पुत्र की हत्या कर दी।"

७) मैं थक गई हूँ। तुम्हारा साथ न छूट जाए, इस भय से सत्ता की दौड़ में तुम्हारे पीछे-पीछे भागती रही। अब... और अब मुझसे नहीं भागा जाएगा। मैं थक गई हूँ। बिल्कुल थक गई हूँ।

८) "मेरे लिए तुम दोनों ही समान थे। मैंने निश्चय किया, तुम दोनों में जो भी राजा बनेगा, उससे मैं अपना अधिकार छीनने का प्रतिशोध लूँगा।"

९) मैंने तुम्हारी हत्या नहीं की। मैंने तो हत्या की है उस प्रतिगर्व की, जो मेरा गर्व सहन नहीं कर सकता, चाहे वह पत्नी हो, मित्र हो, बहन या पिता हो। उसे नष्ट होना ही है।

१०) "कौन-सा आठवाँ? कोई भी आठवां है। आठवां... आठवां या आठ में से कोई एक... कोई भी एक।"

११) "तुम्हारा यह भाई तुम्हें और कुछ नहीं दे सकेगा - सिवाय यंत्रणा, कारागार और कष्ट के। रो लो। मेरी दुलारी बहन रो लो।"

१२) "आज से यादव-साम्राज्य में नाटक नहीं होगे। आज से संगीत का निषेध। आज से देवोपासना, धर्मशिक्षाओं का निषेध।"

१३) "नारी की समस्त शारीरिकता, मानसिकता और भावुकता का केन्द्र क्या उसकी कोख ही है?"

१४) "मेरा प्रतिशोध यही था कि तुम्हें इतना ऊँचा उठाऊँ, इतना ऊँचा कि वहाँ से गिरकर तुम इतने आहत हो कि सहन कर सको। मैं अपने उद्देश्य में सफल रहा।"

१५) "हाँ, मुझे अपने पिता पर गर्व है। मैं हँस रही थी। तुम पर हँस रही थी। और हँसूगी। तुम क्या कर सकते हो? तुम्हें इतना डरते हो, यह जानती तो मगध से और सैनिक ले आती।"

५.७ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'कथा एक कंस की' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

२) 'कथा एक कंस की' नाटक का उद्देश्य लिखिए।

३) 'कथा एक कंस की' नाटक में पौराणिक कथा के साथ-साथ कल्पना का सुन्दर समन्वय हुआ है। नाटक के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

४) 'कथा एक कंस की' नाटक में कंस के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

५) 'कथा एक कंस की' नाटके के आधार पर अस्ति का चरित्र चित्रण कीजिए।

६) 'कथा एक कंस की' नाटक में स्वाति के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

७) 'कथा एक कंस की' नाटक में प्रलंब के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

८) 'कथा एक कंस की' नाटक में प्रद्योत के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

९) 'कथा एक कंस की' नाटक में देवकी के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

१०) 'कथा एक कंस की' नाटक के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं। स्पष्ट कीजिए।

५.८ लघूत्तरीय प्रश्न

१) 'कथा एक कंस की' किस विधा की रचना है?

उत्तर - नाटक विधा की रचना है।

२) 'कथा एक कंस की' के लेखक कौन है?

उत्तर - दया प्रकाश सिन्हा है।

३) 'कथा एक कंस की' नाटक का सर्वप्रथम मंचन कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर - सर्वप्रथम लखनऊ में, १८ जून, १९७५ को रवीन्द्रालय में।

४) उग्रसेन कौन था?

उत्तर - मथुरा नरेश तथा कंस के पिताजी थे।

५) कंस कौन था

उत्तर - मथुरा नरेश उग्रसेन के पुत्र, श्रीकृष्ण का मामा था।

६) अस्ति कौन थी ?

उत्तर - मगध नरेश जरासंध की पुत्री, राजकुमारी और कंस की पत्नी।

७) स्वाति कौन थी ?

उत्तर - कंस की प्रेमिका, प्रद्योत की पत्नी और पूतना थी।

८) वसुदेव कौन था ?

उत्तर - कंस के बचपन के मित्र, देवकी के पति, श्रीकृष्ण के पिता और हस्तिनापुर नरेश पांडु की पत्नी कुंती के भाई थे।

९) देवकी कौन थी ?

उत्तर - श्रीकृष्ण की माता, वसुदेव की पत्नी और कंस की बहन थी।

१०) प्रद्योत कौन था ?

उत्तर - कंस के बचपन का मित्र और उसका (मथुरा) का सेनापति था।

११) प्रलंब कौन था ?

उत्तर - कंस का बड़ा भाई और मंत्री।

१२) बाहुक कौन था ?

उत्तर - मगध नरेश जरासंध का सेनापति और दूत था।

१३) वृत्रिघ्न कौन था ?

उत्तर - मगध नरेश जरासंध का प्रिय सेनापति।

१४) कंस का सबसे प्रिय अस्त्रशस्त्र क्या था ?

उत्तर - वीणा था।

१५) स्वाति किस रूप में श्रीकृष्ण को मारने गई थी ?

उत्तर - पूतना राक्षसी का रूप लेकर गई थी।

१६) जरासंध ने कंस को कौनसी जिम्मेदारी थी ?

उत्तर - अश्वमेध यज्ञमें घोड़े की जिम्मेदारी दी थी।

१७) कंस किसके सहयोग से अपने पिता को राजगद्दी से उतार कर जेल में डालता है ?

उत्तर - मगध नरेश और अपने ससुर जरासंध के सहयोग से।

१८) अस्ति को किस पर गर्व था ?

उत्तर - अपने पिता जरासंध की कंस के प्रति कृपादृष्टि पर गर्व था।

१९) अस्ति का हत्या किसने की थी ?

उत्तर - स्वयं कंस ने की थी।

२०) कंस ने अपनी प्रेमिका स्वाति का विवाह प्रद्योत से क्यों किया ?

उत्तर - अपने सेनापति प्रद्योत पर हमेशा नजर बनाए रखने के लिए।

२१) कंस अश्वमेध यज्ञ से कितने वर्षो के बाद मथुरा लौटता है ?

उत्तर - बारह (१२) वर्षो के बाद।

२२) कंस किससे भयाक्रांत था ?

उत्तर - श्रीकृष्ण द्वारा अपनी मृत्यु से।

२३) कंस आजीवन किसके लिए तरसता है ?

उत्तर - शांतिपूर्ण नींद के लिए।

२४) उग्रसेन का अवैध पुत्र कौन था ?

उत्तर - प्रलंब था।

२५) कंस ने अपने राज्य में किस प्रतिबंध लगाया था ?

उत्तर - नाटक, संगीत पर

२६) कंस के शासन किस भगवान की पूजा होती थी ?

उत्तर - कंस भगवान की, उसी का मंदिर भी बना था।

❖❖❖❖

munotes.in